

मती

ईसा मसीह का नसबनामा

1 ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का नसबनामा :

2 इब्राहीम इसहाक का बाप था, इसहाक याकूब का बाप और याकूब यहूदा और उसके भाइयों का बाप। 3 यहूदा के दो बेटे फारस और ज़ारह थे (उनकी माँ तमर थी)। फारस हसरोन का बाप और हसरोन राम का बाप था। 4 राम अम्मिनदाब का बाप, अम्मिनदाब नहसोन का बाप और नहसोन सलमोन का बाप था। 5 सलमोन बोअज़ का बाप था (बोअज़ की माँ राहब थी)। बोअज़ ओबेद का बाप था (ओबेद की माँ स्त थी)। ओबेद यस्सी का बाप और 6 यस्सी दाऊद बादशाह का बाप था।

दाऊद सुलेमान का बाप था (सुलेमान की माँ पहले ऊरिय्याह की बीवी थी)। 7 सुलेमान रहुबियाम का बाप, रहुबियाम अबियाह का बाप और अबियाह आसा का बाप था। 8 आसा यहसफत का बाप, यहसफत यूराम का बाप और यूराम उज़्जियाह का बाप था। 9 उज़्जियाह यूताम का बाप, यूताम आखज़ का बाप और आखज़ हिज़कियाह का बाप था। 10 हिज़कियाह मनस्सी का बाप, मनस्सी अमून का बाप और अमून यूसियाह का बाप था। 11 यूसियाह यह्याकीन * और उसके भाइयों का बाप था (यह बाबल की जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।

12 बाबल की जिलावतनी के बाद यह्याकीन † सियालतियेल का बाप और सियालतियेल ज़रूबाबल का बाप था। 13 ज़रूबाबल अबीहद का बाप, अबीहद इलियाक्रीम का बाप और इलियाक्रीम आजोर का बाप था। 14 आजोर सदोक का बाप, सदोक अखीम का बाप और अखीम इलीहद का बाप था। 15 इलीहद इलियज़र का बाप, अलियज़र मत्तान का बाप और मत्तान का बाप याकूब था। 16 याकूब मरियम के शौहर यूसुफ का बाप था। इस मरियम से ईसा पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है।

17 यों इब्राहीम से दाऊद तक 14 नसलें हैं, दाऊद से बाबल की जिलावतनी तक 14 नसलें हैं और जिलावतनी से मसीह तक 14 नसलें हैं।

* **1:11** यूनानी में यह्याकीन का मुतरादिफ यकूनियाह मुस्तामल है। † **1:12** यूनानी में यह्याकीन का मुतरादिफ यकूनियाह मुस्तामल है।

ईसा मसीह की पैदाइश

18 ईसा मसीह की पैदाइश यों हुई : उस वक़्त उस की माँ मरियम की मँगनी यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी कि वह रूहुल-कुदूस से हामिला पाई गई। अभी उनकी शादी नहीं हुई थी। 19 उसका मंगेतर यूसुफ़ रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को बदनाम नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने खामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया। 20 वह इस बात पर अभी गौरो-फ़िकर कर ही रहा था कि रब का फ़रिश्ता खाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, “यूसुफ़ बिन दाऊद, मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहुल-कुदूस से है। 21 उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क्रौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।”

22 यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि रब की वह बात पूरी हो जाए जो उसने अपने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, 23 “देखो एक कुँवारी हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।” (इम्मानुएल का मतलब ‘ख़ुदा हमारे साथ’ है।)

24 जब यूसुफ़ जाग उठा तो उसने रब के फ़रिश्ते के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली और उसे अपने घर ले गया। 25 लेकिन जब तक उसके बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर न हुआ। और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम ईसा रखा।

2

मशरिक् से मजूसी आलिम

1 ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सूबा यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ। उन दिनों में कुछ मजूसी आलिम मशरिक् से आकर यरूशलम पहुँच गए। 2 उन्होंने पूछा, “यहूदियों का वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही में पैदा हुआ है? क्योंकि हमने मशरिक् में उसका सितारा देखा है और हम उसे सिजदा करने आए हैं।”

3 यह सुनकर हेरोदेस बादशाह पूरे यरूशलम समेत घबरा गया। 4 तमाम राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा को जमा करके उसने उनसे दरियाफ़्त किया कि मसीह कहाँ पैदा होगा।

5 उन्होंने जवाब दिया, “यहूदिया के शहर बैत-लहम में, क्योंकि नबी की मारिफ़त यों लिखा है, 6 ‘ऐ मुल्के-यहूदिया में वाके बैत-लहम, तू यहूदिया के

हुक्मरानों में हरगिज़ सबसे छोटा नहीं। क्योंकि तुझमें से एक हुक्मरान निकलेगा जो मेरी क्रौम इसराईल की गल्लाबानी करेगा'।”

7 इस पर हेरोदेस ने खुफिया तौर पर मजूसी आलिमों को बुलाकर तफसील से पूछा कि वह सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8 फिर उसने उन्हें बताया, “बैत-लहम जाएँ और तफसील से बच्चे का पता लगाएँ। जब आप उसे पा लें तो मुझे इतला दें ताकि मैं भी जाकर उसे सिजदा करूँ।”

9 बादशाह के इन अलफ़ाज़ के बाद वह चले गए। और देखो जो सितारा उन्होंने मशरिक़ में देखा था वह उनके आगे आगे चलता गया और चलते चलते उस मक़ाम के ऊपर ठहर गया जहाँ बच्चा था। 10 सितारे को देखकर वह बहुत ख़ुश हुए। 11 वह घर में दाखिल हुए और बच्चे को माँ के साथ देखकर उन्होंने औंधे मुँह गिरकर उसे सिजदा किया। फिर अपने डिब्बे खोलकर उसे सोने, लुबान और मुर के तोहफ़े पेश किए।

12 जब रवानगी का वक़्त आया तो वह यरूशलम से होकर न गए बल्कि एक और रास्ते से अपने मुल्क चले गए, क्योंकि उन्हें खाब में आगाह किया गया था कि हेरोदेस के पास वापस न जाओ।

मिसर की जानिब हिजरत

13 उनके चले जाने के बाद रब का फ़रिश्ता खाब में यूसुफ़ पर जाहिर हुआ और कहा, “उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर को हिजरत कर जा। जब तक मैं तुझे इतला न दूँ वहीं ठहरा रह, क्योंकि हेरोदेस बच्चे को तलाश करेगा ताकि उसे क़त्ल करे।”

14 यूसुफ़ उठा और उसी रात बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर के लिए रवाना हुआ। 15 वहाँ वह हेरोदेस के इंतक़ाल तक रहा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, “मैंने अपने फ़रज़ंद को मिसर से बुलाया।”

बच्चों का क़त्ल

16 जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी आलिमों ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा तैश आया। उसने अपने फ़ौजियों को बैत-लहम भेजकर उन्हें हुक्म दिया कि बैत-लहम और इर्दगिर्द के इलाक़े के उन तमाम लड़कों को क़त्ल करें जिनकी उम्र दो साल तक हो। क्योंकि उसने मजूसियों से बच्चे की उम्र के बारे में यह मालूम कर लिया था।

17 यों यरमियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, 18 “रामा में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राखिल अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली कबूल नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।”

मिसर से वापसी

19 जब हेरोदेस इतकाल कर गया तो रब का फ़रिश्ता खाब में यूसुफ़ पर जाहिर हुआ जो अभी मिसर ही में था। 20 फ़रिश्ते ने उसे बताया, “उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मुल्के-इसराईल वापस चला जा, क्योंकि जो बच्चे को जान से मारने के दरपै थे वह मर गए हैं।” 21 चुनाँचे यूसुफ़ उठा और बच्चे और उस की माँ को लेकर मुल्के-इसराईल में लौट आया।

22 लेकिन जब उसने सुना कि अरखिलाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में तख़्तनशीन हो गया है तो वह वहाँ जाने से डर गया। फिर खाब में हिदायत पाकर वह गलील के इलाके के लिए रवाना हुआ। 23 वहाँ वह एक शहर में जा बसा जिसका नाम नासरत था। यों नबियों की बात पूरी हुई कि ‘वह नासरी कहलाएगा।’

3

यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देनेवाला आया और यहूदिया के रेगिस्तान में एलान करने लगा, 2 “तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही करीब आ गई है।” 3 यहया वही है जिसके बारे में यसायाह नबी ने फ़रमाया, ‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है, रब की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।’

4 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। खुराक के तौर पर वह टिट्टियाँ और जंगली शहद खाता था। 5 लोग यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरियाए-यरदन के पूरे इलाके से निकलकर उसके पास आए। 6 और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।

7 बहुत-से फ़रीसी और सदूकी भी वहाँ आए जहाँ वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देखकर उसने कहा, “ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो! किसने तुम्हें आनेवाले गज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी ज़िंदगी से जाहिर करो कि तुमने वाकई तौबा की है। 9 यह खयाल मत करो कि हम तो बच जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है।

मैं तुमको बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर दरख्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा। 11 मैं तो तुम तौबा करनेवालों को पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं उसके जूतों को उठाने के भी लायक नहीं। वह तुम्हें रूहल-कुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। 12 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”

ईसा का बपतिस्मा

13 फिर ईसा गलील से दरियाए-यरदन के किनारे आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। 14 लेकिन यहया ने उसे रोकने की कोशिश करके कहा, “मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे पास क्यों आए हैं?”

15 ईसा ने जवाब दिया, “अब होने ही दे, क्योंकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त मरज़ी पूरी करें।” * इस पर यहया मान गया।

16 बपतिस्मा लेने पर ईसा फौरन पानी से निकला। उसी लमहे आसमान खुल गया और उसने अल्लाह के रूह को देखा जो कबूतर की तरह उतरकर उस पर ठहर गया। 17 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, इससे मैं खुश हूँ।”

4

ईसा को आजमाया जाता है

1 फिर रूहल-कुद्स ईसा को रेगिस्तान में ले गया ताकि उसे इबलीस से आजमाया जाए। 2 चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखने के बाद उसे आखिरकार भूक लगी। 3 फिर आजमानेवाला उसके पास आकर कहने लगा, “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ।”

* 3:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है कि इनसान की जिंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।”

5 इस पर इबलीस ने उसे मुकद्दस शहर यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुकद्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, 6 “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है, ‘वह तेरी खातिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे’।”

7 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलामे-मुकद्दस यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने खुदा को न आजमाना’।”

8 फिर इबलीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उनकी शानो-शौकत दिखाई। 9 वह बोला, “यह सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिरकर मुझे सिजदा करे।”

10 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, “इबलीस, दफ़ा हो जा! क्योंकि कलामे-मुकद्दस में यों लिखा है, ‘रब अपने खुदा को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”

11 इस पर इबलीस उसे छोड़कर चला गया और फ़रिश्ते आकर उस की खिदमत करने लगे।

गलील में ईसा की खिदमत का आगाज़

12 जब ईसा को ख़बर मिली कि यहया को जेल में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया और गलील में आया। 13 नासरत को छोड़कर वह झील के किनारे पर वाक़े शहर कफ़र्नहम में रहने लगा, यानी ज़बूलून और नफ़ताली के इलाक़े में।

14 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

15 “ज़बूलून का इलाक़ा, नफ़ताली का इलाक़ा,
झील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन के पार,
गैरयहूदियों का गलील :

16 अंधेरे में बैठी कौम ने एक तेज़ रौशनी देखी,
मौत के साये में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी।”

17 उस वक़्त से ईसा इस पैग़ाम की मुनादी करने लगा, “तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही करीब आ गई है।”

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

18 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने दो भाइयों को देखा—शमौन जो पतरस भी कहलाता था और अंदरियास को। वह पानी में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वह माहीगीर थे। 19 उसने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।” 20 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

21 आगे जाकर ईसा ने दो और भाइयों को देखा, याकूब बिन ज़बदी और उसके भाई यूहन्ना को। वह कश्ती में बैठे अपने बाप ज़बदी के साथ अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें बुलाया 22 तो वह फ़ौरन कश्ती और अपने बाप को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शफ़ा देता है

23 और ईसा गलील के पूरे इलाके में फिरता रहा। जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतखानों में तालीम देता, बादशाही की खुशखबरी सुनाता और हर किस्म की बीमारी और अलालत से शफ़ा देता था। 24 उस की खबर मुल्के-शाम के कोने कोने तक पहुँच गई, और लोग अपने तमाम मरीजों को उसके पास लाने लगे। किस्म किस्म की बीमारियों तले दबे लोग, ऐसे जो शदीद दर्द का शिकार थे, बदरूहों की गिरिफ्त में मुब्तला, मिरगीवाले और फ़ालिजज़दा, गरज़ जो भी आया ईसा ने उसे शफ़ा बख़्शी। 25 गलील, दिकपुलिस, यरूशलम, यहूदिया और दरियाए-यरदन के पार के इलाके से बड़े बड़े हज़ूम उसके पीछे चलते रहे।

5

पहाड़ी वाज़

1 भीड़ को देखकर ईसा पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। उसके शागिर्द उसके पास आए 2 और वह उन्हें यह तालीम देने लगा :

हकीक़ी खुशी

3 “मुबारक हैं वह जिनकी रूह ज़रूरतमंद है, क्योंकि आसमान की बादशाही उन्हीं की है।

4 मुबारक हैं वह जो मातम करते हैं, क्योंकि उन्हें तसल्ली दी जाएगी।

5 मुबारक हैं वह जो हलीम हैं, क्योंकि वह ज़मीन विरसे में पाएँगे।

6 मुबारक हैं वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और प्यास है, क्योंकि वह सेर हो जाएंगे।

7 मुबारक हैं वह जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन पर रहम किया जाएगा।

8 मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि वह अल्लाह को देखेंगे।

9 मुबारक हैं वह जो सुलह कराते हैं, क्योंकि वह अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाएंगे।

10 मुबारक हैं वह जिनको रास्तबाज़ होने के सबब से सताया जाता है, क्योंकि उन्हें आसमान की बादशाही विरसे में मिलेगी।

11 मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वजह से तुम्हें लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे बारे में हर किस्म की बुरी और झूठी बात करते हैं। 12 खुशी मनाओ और बाग बाग हो जाओ, तुमको आसमान पर बड़ा अज़्र मिलेगा। क्योंकि इसी तरह उन्होंने तुमसे पहले नबियों को भी ईज़ा पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

13 तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का ज़ायका जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँवों तले रौंदा जाएगा।

14 तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाके शहर की तरह तुमको छुपाया नहीं जा सकता। 15 जब कोई चराम जलाता है तो वह उसे बरतन के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद को रौशनी देता है। 16 इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर तुम्हारे आसमानी बाप को जलाल दें।

शरीअत

17 यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख करने आया हूँ। मनसूख करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने आया हूँ। 18 मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन कायम रहेंगे तब तक शरीअत भी कायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 जो इन सबसे छोटे अहकाम में से एक को भी मनसूख करे और लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की बादशाही में सबसे छोटा करार दिया जाएगा। इसके मुकाबले में जो इन अहकाम पर अमल करके इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही में बड़ा करार दिया जाएगा। 20 क्योंकि मैं

तुमको बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीर के उलमा और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाखिल होने के लायक नहीं।

गुस्सा

21 तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, 'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे अदालत में जवाब देना होगा।' 22 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर गुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई को 'अहमक' कहे उसे यहूदी अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो उसको 'बेवकूफ़!' कहे वह जहन्नुम की आग में फेंके जाने के लायक ठहरेगा। 23 लिहाज़ा अगर तुझे बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानी पेश करते वक़्त याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत है 24 तो अपनी क़ुरबानी को वहीं क़ुरबानागह के सामने ही छोड़कर अपने भाई के पास चला जा। पहले उससे सुलह कर और फिर वापस आकर अल्लाह को अपनी क़ुरबानी पेश कर।

25 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाखिल होने से पहले पहले जल्दी से झगडा खत्म कर। ऐसा न हो कि वह तुझे जज के हवाले करे, जज तुझे पुलिस अफसर के हवाले करे और नतीजे में तुझको जेल में डाला जाए। 26 मैं तुझे सच बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रकम अदा न कर दे।

ज़िनाकारी

27 तुमने यह हूक़म सुन लिया है कि 'ज़िना न करना।' 28 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत को बुरी ख़ाहिश से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है। 29 अगर तेरी दाईं आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता रहे। 30 और अगर तेरा दहना हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम में जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता रहे।

तलाक़

31 यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी बीवी को तलाक़ दे वह उसे तलाक़नामा लिख दे।' 32 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि अगर किसी की बीवी ने

ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे तलाक़ दे तो वह उससे ज़िना कराता है। और जो तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह ज़िना करता है।

कसम मत खाना

33 तुमने यह भी सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, ‘झूटी कसम मत खाना बल्कि जो वादे तूने रब से कसम खाकर किए हों उन्हें पूरा करना।’ 34 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, कसम बिलकुल न खाना। न ‘आसमान की कसम’ क्योंकि आसमान अल्लाह का तरख़्त है, 35 न ‘ज़मीन की’ क्योंकि ज़मीन उसके पाँवों की चौकी है। ‘यरूशलम की कसम’ भी न खाना क्योंकि यरूशलम अज़ीम बादशाह का शहर है। 36 यहाँ तक कि अपने सर की कसम भी न खाना, क्योंकि तू अपना एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं कर सकता। 37 सिर्फ़ इतना ही कहना, ‘जी हाँ’ या ‘जी नहीं।’ अगर इससे ज़्यादा कहो तो यह इबलीस की तरफ़ से है।

बदला लेना

38 तुमने सुना है कि यह फ़रमाया गया है, ‘आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।’ 39 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि बदकार का मुकाबला मत करना। अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दे। 40 अगर कोई तेरी कमीस लेने के लिए तुझ पर मुक़दमा करना चाहे तो उसे अपनी चादर भी दे देना। 41 अगर कोई तुझको उसका सामान उठाकर एक किलोमीटर जाने पर मजबूर करे तो उसके साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42 जो तुझसे कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझसे कर्ज़ लेना चाहे उससे इनकार न करना।

दुश्मन से मुहब्बत

43 तुमने सुना है कि फ़रमाया गया है, ‘अपने पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से नफ़रत करना।’ 44 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। 45 फिर तुम अपने आसमानी बाप के फ़रज़ंद ठहरोगे, क्योंकि वह अपना सूरज सब पर तुलू होने देता है, खाह वह अच्छे हों या बुरे। और वह सब पर बारिश बरसने देता है, खाह वह रास्तबाज़ हों या नारास्त। 46 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे करते हैं तो तुमको क्या अज़्र मिलेगा? टैक्स लेनेवाले भी तो ऐसा ही करते हैं। 47 और अगर तुम सिर्फ़ अपने भाइयों के लिए सलामती की दुआ करो तो कौन-सी ख़ास

बात करते हो? गैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं। 48 चुनाँचे वैसे ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल है।

6

खैरात

1 खबरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने दिखावे के लिए न करो, वरना तुमको अपने आसमानी बाप से कोई अज्र नहीं मिलेगा।

2 चुनाँचे खैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह न कर जो इबादतखानों और गलियों में बिगुल बजाकर इसका एलान करते हैं ताकि लोग उनकी इज्जत करें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 3 इसके बजाए जब तू खैरात दे तो तेरे दाँए हाथ को पता न चले कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। 4 तेरी खैरात यों पोशीदगी में दी जाए तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

दुआ

5 दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतखानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 6 इसके बजाए जब तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

7 दुआ करते वक़्त गैरयहूदियों की तरह तवील और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। 8 उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से वाकिफ़ है, 9 बल्कि यों दुआ किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।

10 तेरी बादशाही आए।

तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो।

11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।

12 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर

जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया *

जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।

13 और हमें आजमाइश में न पड़ने दे

बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।

[क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल अबद तक तेरे ही हैं।]

14 क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको मुआफ़ करेगा। 15 लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा।

रोज़ा

16 रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह लटकाए न फ़िरो, क्योंकि वह ऐसा रूप भरते हैं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज़्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 17 ऐसा मत करना बल्कि रोज़े के वक़्त अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। 18 फिर लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू रोज़ा से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

आसमान पर खज़ाना

19 इस दुनिया में अपने लिए खज़ाने जमा न करो, जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें खा जाते और चोर नक़ब लगाकर चुरा लेते हैं। 20 इसके बजाए अपने खज़ाने आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें तबाह नहीं कर सकते, न चोर नक़ब लगाकर चुरा सकते हैं। 21 क्योंकि जहाँ तेरा खज़ाना है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा।

जिस्म की रौशनी

22 बदन का चराग़ आँख है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा। 23 लेकिन अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा पूरा बदन अंधेरा ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अंदर की रौशनी तारीकी हो तो यह तारीकी कितनी शदीद होगी!

बेफ़िकर होना

* 6:12 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : हमारे कर्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हमने अपने कर्ज़दारों को मुआफ़ किया।

24 कोई भी दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफरत करके दूसरे से मुहब्बत रखेगा या एक से लिपटकर दूसरे को हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की खिदमत नहीं कर सकते।

25 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ और क्या पिऊँ। और जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। क्या ज़िंदगी खाने-पीने से अहम नहीं है? और क्या जिस्म पोशाक से ज्यादा अहमियत नहीं रखता? 26 परिदों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काटकर उन्हें गोदाम में जमा करते हैं। तुम्हारा आसमानी बाप खुद उन्हें खाना खिलाता है। क्या तुम्हारी उनकी निसबत ज्यादा कदरो-क्रीमत नहीं है? 27 क्या तुममें से कोई फ़िकर करते करते अपनी ज़िंदगी में एक लमहे का भी इज़ाफ़ा कर सकता है?

28 और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यों फ़िकरमंद होते हो? ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। 29 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलबबस नहीं था जैसे उनमें से एक। 30 अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमाएतक़ादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

31 चुनौचे परेशानी के आलम में फ़िकर करते करते यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम क्या पहनें?' 32 क्योंकि जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे आसमानी बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है। 33 पहले अल्लाह की बादशाही और उस की रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी। 34 इसलिए कल के बारे में फ़िकर करते करते परेशान न हो क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िकर कर लेगा। हर दिन की अपनी मुसीबतें काफ़ी हैं।

7

औरों का मुंसिफ़ बनना

1 दूसरों की अदालत मत करना, वरना तुम्हारी अदालत भी की जाएगी।

2 क्योंकि जितनी सख्ती से तुम दूसरों का फैसला करते हो उतनी सख्ती से तुम्हारा

भी फैसला किया जाएगा। और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी पैमाने से तुम भी नापे जाओगे। ³ तू क्यों गौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? ⁴ तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी आँख में शहतीर है। ⁵ रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा।

⁶ कुत्तों को मुकद्दस खुराक मत खिलाना और सुअरों के आगे अपने मोती न फेंकना। ऐसा न हो कि वह उन्हें पाँवों तले रौंदें और मुडकर तुमको फाड़ डालें।

माँगते रहना

⁷ माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा। ढूँढते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। ⁸ क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँढता है उसे मिलता है, और जो खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। ⁹ तुममें से कौन अपने बेटे को पत्थर देगा अगर वह रोटी माँगे? ¹⁰ या कौन उसे साँप देगा अगर वह मछली माँगे? कोई नहीं! ¹¹ जब तुम बुरे होने के बावजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज्यादा यकीनी बात है कि तुम्हारा आसमानी बाप माँगनेवालों को अच्छी चीज़ें देगा।

¹² हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्योंकि यही शरीरगत और नबियों की तालीमात का लुब्बे-लुबाब है।

तंग दरवाज़ा

¹³ तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि हलाकत की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता कुशादा और उसका दरवाज़ा चौड़ा है। बहुत-से लोग उसमें दाखिल हो जाते हैं। ¹⁴ लेकिन जिंदगी की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता तंग है और उसका दरवाज़ा छोटा। कम ही लोग उसे पाते हैं।

हर दरख़्त का अपना फल होता है

¹⁵ झूटे नबियों से ख़बरदार रहो! गो वह भेड़ों का भेस बदलकर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन अंदर से वह ग़ारतगर भेड़िये होते हैं। ¹⁶ उनका फल देखकर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या ख़ारदार झाड़ियों से अंगूर तोड़े जाते हैं या ऊँटकारों

से अंजीर? हरगिज़ नहीं। 17 इसी तरह अच्छा दरख्त अच्छा फल लाता है और खराब दरख्त खराब फल। 18 न अच्छा दरख्त खराब फल ला सकता है, न खराब दरख्त अच्छा फल। 19 जो भी दरख्त अच्छा फल नहीं लाता उसे काटकर आग में झोंका जाता है। 20 यों तुम उनका फल देखकर उन्हें पहचान लोगे।

सिर्फ असल पैरोकार दाखिल होंगे

21 जो मुझे 'खुदावंद, खुदावंद' कहते हैं उनमें से सब आसमान की बादशाही में दाखिल न होंगे बल्कि सिर्फ वह जो मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पर अमल करते हैं। 22 अदालत के दिन बहुत-से लोग मुझसे कहेंगे, 'ऐ खुदावंद, खुदावंद! क्या हमने तेरे ही नाम में नब्रुवत नहीं की, तेरे ही नाम से बदस्न्हें नहीं निकाली, तेरे ही नाम से मोजिजे नहीं किए?' 23 उस वक़्त मैं उनसे साफ़ साफ़ कह दूँगा, 'मेरी कभी तुमसे जान पहचान न थी। ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।'

दो क्रिस्म के मकान

24 लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की मानिंद है जिसने अपने मकान की बुनियाद चटान पर रखी। 25 बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी। लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उस की बुनियाद चटान पर रखी गई थी।

26 लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिंद है जिसने अपना मकान सहीह बुनियाद डाले बग़ैर रेत पर तामीर किया। 27 जब बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी तो यह मकान धड़ाम से गिर गया।”

ईसा का इख्तियार

28 जब ईसा ने यह बातें खत्म कर लीं तो लोग उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, 29 क्योंकि वह उनके उलमा की तरह नहीं बल्कि इख्तियार के साथ सिखाता था।

8

कोढ से शफ़ा

1 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उसके पीछे चलने लगी। 2 फिर एक आदमी उसके पास आया जो कोढ का मरीज़ था। मुँह के बल गिरकर उसने कहा, “खुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।”

3 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ हो जा।” इस पर वह फौरन उस बीमारी से पाक-साफ हो गया। 4 ईसा ने उससे कहा, “खबरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुकद्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तकाज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली है। यों अलानिया तसदीक हो जाएगी कि तू वाकई पाक-साफ हो गया है।”

रोमी अफ़सर के गुलाम की शफ़ा

5 जब ईसा कफ़र्नहम में दाखिल हुआ तो सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़सर उसके पास आकर उस की मिन्नत करने लगा, 6 “खुदावंद, मेरा गुलाम मफलूज हालत में घर में पड़ा है, और उसे शदीद दर्द हो रहा है।”

7 ईसा ने उससे कहा, “मैं आकर उसे शफ़ा दूँगा।”

8 अफ़सर ने जवाब दिया, “नहीं खुदावंद, मैं इस लायक नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं से हुक्म करें तो मेरा गुलाम शफ़ा पा जाएगा। 9 क्योंकि मुझे खुद आला अफ़सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और दूसरे को ‘आ!’ तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, ‘यह कर’ तो वह करता है।”

10 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने मुड़कर अपने पीछे आनेवालों से कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस क्रिस्म का ईमान नहीं पाया। 11 मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत-से लोग मशरिक और मगरिब से आकर इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ आसमान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12 लेकिन बादशाही के असल वारिसों को निकालकर अंधेरे में डाल दिया जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।” 13 फिर ईसा अफ़सर से मुखातिब हुआ, “जा, तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है।”

और अफ़सर के गुलाम को उसी घड़ी शफ़ा मिल गई।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ा

14 ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उसने पतरस की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुखार था। 15 उसने उसका हाथ छू लिया तो बुखार उतर गया और वह उठकर उस की ख़िदमत करने लगी।

16 शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ्त में पड़े बहुत-से लोगों को ईसा के पास लाया गया। उसने बदरूहों को हुक्म देकर निकाल दिया और तमाम मरीजों को शफा दी। 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “उसने हमारी कमजोरियाँ ले लीं और हमारी बीमारियाँ उठा लीं।”

पैरवी की संजीदगी

18 जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हज़ूम देखा तो उसने शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19 रवाना होने से पहले शरीअत का एक आलिम उसके पास आकर कहने लगा, “उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।”

20 ईसा ने जवाब दिया, “लोमडियाँ अपने भटों में और परिदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।”

21 किसी और शागिर्द ने उससे कहा, “खुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।”

22 लेकिन ईसा ने उसे बताया, “मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे दफ़न करने दे।”

ईसा आँधी को थमा देता है

23 फिर वह कश्ती पर सवार हुआ और उसके पीछे उसके शागिर्द भी। 24 अचानक झील पर सख्त आँधी चलने लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन ईसा सो रहा था। 25 शागिर्द उसके पास गए और उसे जगाकर कहने लगे, “खुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं!”

26 उसने जवाब दिया, “ऐ कमएतकादो! घबराते क्यों हो?” खड़े होकर उसने आँधी और मौजों को डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 27 शागिर्द हैरान होकर कहने लगे, “यह किस किस का शख्स है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”

दो बदरूह-गिरिफ़ता आदमियों की शफ़ा

28 वह झील के पार गदरीनियों के इलाके में पहुँचे तो बदरूह-गिरिफ़ता दो आदमी क़ब्रों में से निकलकर ईसा को मिले। वह इतने खतरनाक थे कि वहाँ से कोई गुज़र नहीं सकता था। 29 चीखें मार मारकर उन्होंने कहा, “अल्लाह के

फरजंद, हमारा आपके साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुकर्रा वक्त से पहले अज़ाब में डालने आए हैं?”

30 कुछ फासले पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था। 31 बदरूहों ने ईसा से इल्तिजा की, “अगर आप हमें निकालते हैं तो सुअरों के उस गोल में भेज दें।”

32 ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जाओ।” बदरूहें निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा गोल भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरा और झील में झपटकर डूब मरा। 33 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर में जाकर उन्होंने लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरूह-गिरिफ़ता आदमियों के साथ हुआ था। 34 फिर पूरा शहर निकलकर ईसा को मिलने आया। उसे देखकर उन्होंने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाके से चले जाएँ।

9

मफ़लूज़ आदमी की शफ़ा

1 कशती में बैठकर ईसा ने झील को पार किया और अपने शहर पहुँच गया। 2 वहाँ एक मफ़लूज़ आदमी को चारपाई पर डालकर उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर ईसा ने कहा, “बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

3 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने लगे, “यह कुफ़र बक रहा है!”

4 ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, 5 “तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज़ से यह कहना ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ और चल-फिर?’ 6 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज़ से मुखातिब हुआ, “उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

7 वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया। 8 यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमजीद करने लगे कि उसने इनसान को इस किस्म का इख़्तियार दिया है।

मती की बुलाहट

9 आगे जाकर ईसा ने एक आदमी को देखा जो टैक्स लेनेवालों की चौकी पर बैठा था। उसका नाम मती था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और मती उठकर उसके पीछे हो लिया।

10 बाद में ईसा मती के घर में खाना खा रहा था। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी आकर ईसा और उसके शागिर्दों के साथ खाने में शरीक हुए। 11 यह देखकर फ़रीसियों ने उसके शागिर्दों से पूछा, “आपका उस्ताद टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?”

12 यह सुनकर ईसा ने कहा, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 13 पहले जाओ और कलामे-मुकद्दस की इस बात का मतलब जान लो कि ‘मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।’ क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

14 फिर यहया के शागिर्द उसके पास आए और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि हम और फ़रीसी रोज़ा रखते हैं?”

15 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान किस तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा उनके दरमियान है? लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

16 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज़्यादा खराब हो जाएगी। 17 इसी तरह अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डाला जाता। अगर ऐसा किया जाए तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। यों रस और मशकें दोनों ही महफूज़ रहते हैं।”

याईर की बेटी और बीमार औरत

18 ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक यहूदी राहनुमा ने गिरकर उसे सिजदा किया और कहा, “मेरी बेटी अभी अभी मरी है। लेकिन आकर अपना हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा जिंदा हो जाएगी।”

19 ईसा उठकर अपने शागिर्दों समेत उसके साथ हो लिया।

20 चलते चलते एक औरत ने पीछे से आकर ईसा के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत बारह साल से खून बहने की मरीजा थी 21 और वह सोच रही थी, “अगर मैं सिर्फ उसके लिबास को ही छू लूँ तो शफा पा लूँगी।”

22 ईसा ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “बेटी, हौसला रख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।” और औरत को उसी वक्त शफा मिल गई।

23 फिर ईसा राहनुमा के घर में दाखिल हुआ। बाँसरी बजानेवाले और बहुत-से लोग पहुँच चुके थे और बहुत शोर-शराबा था। यह देखकर 24 ईसा ने कहा, “निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।” लोग हँसकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। 25 लेकिन जब सबको निकाल दिया गया तो वह अंदर गया। उसने लड़की का हाथ पकड़ा तो वह उठ खड़ी हुई। 26 इस मोजिजे की खबर उस पूरे इलाके में फैल गई।

दो अंधों की शफा

27 जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे उसके पीछे चलकर चिल्लाने लगे, “इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

28 जब ईसा किसी के घर में दाखिल हुआ तो वह उसके पास आए। ईसा ने उनसे पूछा, “क्या तुम्हारा ईमान है कि मैं यह कर सकता हूँ?”

उन्होंने जवाब दिया, “जी, खुदावंद।”

29 फिर उसने उनकी आँखें छूकर कहा, “तुम्हारे साथ तुम्हारे ईमान के मुताबिक हो जाए।” 30 उनकी आँखें बहाल हो गईं और ईसा ने सरख्ती से उन्हें कहा, “खबरदार, किसी को भी इसका पता न चले!”

31 लेकिन वह निकलकर पूरे इलाके में उस की खबर फैलाने लगे।

गूँगे आदमी की शफा

32 जब वह निकल रहे थे तो एक गूँगा आदमी ईसा के पास लाया गया जो किसी बदरूह के कब्जे में था। 33 जब बदरूह को निकाला गया तो गूँगा बोलने लगा। हुजूम हैरान रह गया। उन्होंने कहा, “ऐसा काम इसराईल में कभी नहीं देखा गया।”

34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, “वह बदरूहों के सरदार ही की मदद से बदरूहों को निकालता है।”

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35 और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों और गाँवों में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ उसने उनके इबादतखानों में तालीम दी, बादशाही की खुशख़बरी सुनाई और हर क्रिस्म के मरज़ और अलालत से शफ़ा दी। 36 हुज़ूम को देखकर उसे उन पर बड़ा तरस आया, क्योंकि वह पिसे हुए और बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिनका चरवाहा न हो। 37 उसने अपने शागिर्दों से कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर कम। 38 इसलिए फ़सल के मालिक से गुज़ारिश करो कि वह अपनी फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।”

10

बारह रसूलों को इख्तियार दिया जाता है

1 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों को बुलाकर उन्हें नापाक रूहें निकालने और हर क्रिस्म के मरज़ और अलालत से शफ़ा देने का इख्तियार दिया। 2 बारह रसूलों के नाम यह हैं : पहला शमौन जो पतरस भी कहलाता है, फिर उसका भाई अंदरियास, याक़ूब बिन ज़बदी और उसका भाई यूहन्ना, 3 फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, तोमा, मती (जो टैक्स लेनेवाला था), याक़ूब बिन हलफ़ई, तद्दी, 4 शमौन मुजाहिद और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मनों के हवाले कर दिया।

रसूलों को तबलीग़ के लिए भेजा जाता है

5 इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया। साथ साथ उसने उन्हें हिदायत दी, “ग़ैरयहूदी आबादियों में न जाना, न किसी सामरी शहर में, 6 बल्कि सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के पास। 7 और चलते चलते मुनादी करते जाओ कि ‘आसमान की बादशाही करीब आ चुकी है।’ 8 बीमारों को शफ़ा दो, मुरदों को ज़िंदा करो, कोठियों को पाक-साफ़ करो, बदरूहों को निकालो। तुमको मुफ़्त में मिला है, मुफ़्त में ही बाँटना। 9 अपने कमरबंद में पैसे न रखना—न सोने, न चाँदी और न तौबे के सिक्के। 10 न सफ़र के लिए बैग हो, न एक से ज्यादा सूट, न जूते, न लाठी। क्योंकि मज़दूर अपनी रोज़ी का हक़दार है।

11 जिस शहर या गाँव में दाख़िल होते हो उसमें किसी लायक़ शख्स का पता करो और रवाना होते वक़्त तक उसी के घर में ठहरो। 12 घर में दाख़िल होते वक़्त उसे दुआए-ख़ैर दो। 13 अगर वह घर इस लायक़ होगा तो जो सलामती तुमने उसके लिए माँगी है वह उस पर आकर ठहरी रहेगी। अगर नहीं तो यह सलामती तुम्हारे

पास लौट आएगी। 14 अगर कोई घराना या शहर तुमको कबूल न करे, न तुम्हारी सुने तो रवाना होते वक़्त उस जगह की गर्द अपने पाँवों से झाड़ देना। 15 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत के दिन उस शहर की निसबत सदूम और अमूरा के इलाके का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाश्त होगा।

आनेवाली ईज़ारसानियाँ

16 देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा हूँ। इसलिए साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह मासूम बनो। 17 लोगों से खबरदार रहो, क्योंकि वह तुमको मक़ामी अदालतों के हवाले करके अपने इबादतख़ानों में कोड़े लगवाएँगे। 18 मेरी ख़ातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा और यों तुमको उन्हें और शैरयहूदियों को गवाही देने का मौका मिलेगा। 19 जब वह तुम्हें गिरिफ़्तार करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ या किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुमको बताया जाएगा कि क्या कहना है, 20 क्योंकि तुम खुद बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी मारिफ़त बोलेगा।

21 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिदैन के खिलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 22 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक कायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 23 जब वह एक शहर में तुम्हें सताएँगे तो किसी दूसरे शहर को हिजरत कर जाना। मैं तुमको सच बताता हूँ कि इब्ने-आदम की आमद तक तुम इसराईल के तमाम शहरों तक नहीं पहुँच पाओगे।

24 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न गुलाम अपने मालिक से। 25 शागिर्द को इस पर इकतिफ़ा करना है कि वह अपने उस्ताद की मानिंद हो, और इसी तरह गुलाम को कि वह अपने मालिक की मानिंद हो। घराने के सरपरस्त को अगर बदरूहों का सरदार बाल-ज़बूल करार दिया गया है तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहा जाएगा।

किससे डरना है?

26 उनसे मत डरना, क्योंकि जो कुछ अभी छुपा हुआ है उसे आख़िर में जाहिर किया जाएगा, और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसका राज़ आख़िर में खुल जाएगा। 27 जो कुछ मैं तुम्हें अंधेरे में सुना रहा हूँ उसे रोज़े-रौशन में सुना देना। और जो कुछ आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान में बताया गया है उसका छतों से एलान

करो। 28 उनसे खौफ मत खाना जो तुम्हारी रूह को नहीं बल्कि सिर्फ तुम्हारे जिस्म को क़त्ल कर सकते हैं। अल्लाह से डरो जो रूह और जिस्म दोनों को जहन्नुम में डालकर हलाक कर सकता है। 29 क्या चिड़ियों का जोड़ा कम पैसों में नहीं बिकता? ताहम उनमें से एक भी तुम्हारे बाप की इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती। 30 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। 31 लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दरो-कीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इकरार या इनकार करने का नतीजा

32 जो भी लोगों के सामने मेरा इकरार करे उसका इकरार मैं खुद भी अपने आसमानी बाप के सामने करूँगा। 33 लेकिन जो भी लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका मैं भी अपने आसमानी बाप के सामने इनकार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34 यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती कायम करने आया हूँ। मैं सुलह-सलामती नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ। 35 मैं बेटे को उसके बाप के खिलाफ़ खड़ा करने आया हूँ, बेटी को उस की माँ के खिलाफ़ और बहू को उस की सास के खिलाफ़। 36 इनसान के दुश्मन उसके अपने घरवाले होंगे।

37 जो अपने बाप या माँ को मुझसे ज़्यादा प्यार करे वह मेरे लायक़ नहीं। जो अपने बेटे या बेटी को मुझसे ज़्यादा प्यार करे वह मेरे लायक़ नहीं। 38 जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरे लायक़ नहीं। 39 जो भी अपनी जान को बचाए वह उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान को मेरी खातिर खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उसके पैरोकारों को क़बूल करने का अज़्र

40 जो तुम्हें क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है, और जो मुझे क़बूल करता है वह उसको क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा है। 41 जो किसी नबी को क़बूल करे उसे नबी का-सा अज़्र मिलेगा। और जो किसी रास्तबाज़ शख्स को उस की रास्तबाज़ी के सबब से क़बूल करे उसे रास्तबाज़ शख्स का-सा अज़्र मिलेगा। 42 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो इन छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने के बाइस ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उसका अज़्र कायम रहेगा।”

11

यहया का ईसा से सवाल

1 अपने शागिर्दों को यह हिदायात देने के बाद ईसा उनके शहरों में तालीम देने और मुनादी करने के लिए रवाना हुआ।

2 यहया ने जो उस वक्त जेल में था सुना कि ईसा क्या क्या कर रहा है। इस पर उसने अपने शागिर्दों को उसके पास भेज दिया 3 ताकि वह उससे पूछें, “क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में रहें?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है। 5 ‘अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई जाती है।’ 6 मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरग़शता नहीं होता।”

7 यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हुजूम से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8 या क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तबक्को कर रहे थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए हैं? नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। 9 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 10 उसी के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘देख, मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।’ 11 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी आसमान की बादशाही में दाखिल होनेवाला सबसे छोटा शख्स उससे बड़ा है। 12 यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत से लेकर आज तक आसमान की बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही है, और ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं। 13 क्योंकि तमाम नबी और तौरत ने यहया के दौर तक इसके बारे में पेशगोई की है। 14 और अगर तुम यह मानने के लिए तैयार हो तो मानो कि वह इलियास नबी है जिसे आना था। 15 जो सुन सकता है वह सुन ले!

16 मैं इस नसल को किससे तशबीह दूँ? वह उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, 17 ‘हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन

तुमने छाती पीटकर मातम न किया।’ 18 देखो, यहया आया और न खाया, न पिया। यह देखकर लोग कहते हैं कि उसमें बदरूह है। 19 फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया। अब कहते हैं, ‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी है।’ लेकिन हिकमत अपने आमाल से ही सहीह साबित हुई है।”

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफसोस

20 फिर ईसा उन शहरों को डॉटने लगा जिनमें उसने ज़्यादा मोजिजे किए थे, क्योंकि उन्होंने तौबा नहीं की थी। 21 “ऐ खुराज़ीन, तुझ पर अफसोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफसोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिजे किए गए होते जो तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढकर और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते। 22 जी हाँ, अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाशत होगा। 23 और ऐ कफ़र्नहम, क्या तुझे आसमान तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा। अगर सदूम में वह मोजिजे किए गए होते जो तुझमें हुए हैं तो वह आज तक क्रायम रहता। 24 हाँ, अदालत के दिन तेरी निसबत सदूम का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाशत होगा।”

बाप की तमज़ीद

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, “ऐ बाप, आसमानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमज़ीद करता हूँ कि तूने यह बातें दानाओं और अक्लमंदों से छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी हैं। 26 हाँ मेरे बाप, यही तुझे पसंद आया।

27 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपर्द कर दिया है। कोई भी फ़रज़ंद को नहीं जानता सिवाए बाप के। और कोई बाप को नहीं जानता सिवाए फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद बाप को ज़ाहिर करना चाहता है।

28 ऐ थकेमाँदि और बोझ तले दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुमको आराम दूँगा। 29 मेरा जुआ अपने ऊपर उठाकर मुझसे सीखो, क्योंकि मैं हलीम और नरमदिल हूँ। यों करने से तुम्हारी जाने आराम पाएँगी, 30 क्योंकि मेरा जुआ मुलायम और मेरा बोझ हलका है।”

12

सबत के बारे में सवाल

1 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। सबत का दिन था। चलते चलते उसके शागिर्दों को भूक लगी और वह अनाज की बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे। 2 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की, “देखो, आपके शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो सबत के दिन मना है।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी? 4 वह अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और अपने साथियों समेत रब के लिए मखसूसशुदा रोटियाँ खाईं, अगरचे उन्हें इसकी इजाज़त नहीं थी बल्कि सिर्फ़ इमामों को? 5 या क्या तुमने तौरैत में नहीं पढ़ा कि गो इमाम सबत के दिन बैतुल-मुक़द्दस में खिदमत करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते हैं तो भी वह बेइलज़ाम ठहरते हैं? 6 मैं तुम्हें बताता हूँ कि यहाँ वह है जो बैतुल-मुक़द्दस से अफज़ल है। 7 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।’ अगर तुम इसका मतलब समझते तो बेकूसूरों को मुजरिम न ठहराते। 8 क्योंकि इब्ने-आदम सबत का मालिक है।”

सूखे हाथवाले आदमी की शफ़ा

9 वहाँ से चलते चलते वह उनके इबादतखाने में दाखिल हुआ। 10 उसमें एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ था। लोग ईसा पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, “क्या शरीअत सबत के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?”

11 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुममें से किसी की भेड़ सबत के दिन गढे में गिर जाए तो क्या उसे नहीं निकालोगे? 12 और भेड़ की निसबत इनसान की कितनी ज्यादा कदरो-क्रीमत है! गरज़ शरीअत नेक काम करने की इजाज़त देती है।” 13 फिर उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा हुआ था कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।”

उसने ऐसा किया तो उसका हाथ दूसरे हाथ की मारिन्द तनदुस्त हो गया। 14 इस पर फ़रीसी निकलकर आपस में ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

अल्लाह का चुना हुआ ख़ादिम

15 जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से चला गया। बहुत-से लोग उसके पीछे चल रहे थे। उसने उनके तमाम मरीज़ों को शफ़ा देकर 16 उन्हें ताकीद की, “किसी को मेरे बारे में न बताओ।” 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

18 ‘देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैंने चुन लिया है,

मेरा प्यारा जो मुझे पसंद है।
 मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,
 और वह अक्वाम में इनसाफ का एलान करेगा।
 19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।
 गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी।
 20 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,
 न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा
 जब तक वह इनसाफ को गलबा न बख्खे।
 21 उसी के नाम से कौमें उम्मीद रखेंगी।’

ईसा और बदरूहों का सरदार

22 फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया गया जो बदरूह की गिरिफ्त में था। वह अंधा और गूँगा था। ईसा ने उसे शफा दी तो गूँगा बोलने और देखने लगा।
 23 हुज़म के तमाम लोग हक्का-बक्का रह गए और पूछने लगे, “क्या यह इब्ने-दाऊद नहीं?”

24 लेकिन जब फरीसियों ने यह सुना तो उन्होंने कहा, “यह सिर्फ बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मारिफ्त बदरूहों को निकालता है।”

25 उनके यह खयालात जानकर ईसा ने उनसे कहा, “जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी हालत हो वह भी कायम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर इबलीस अपने आपको निकाले तो फिर उसमें फूट पड़ गई है। इस सूरत में उस की बादशाही किस तरह कायम रह सकती है? 27 और अगर मैं बदरूहों को बाल-ज़बूल की मदद से निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही इस बात में तुम्हारे मुसिफ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं अल्लाह के रूह की मारिफ्त बदरूहों को निकाल देता हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।

29 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना किस तरह मुमकिन है जब तक कि उसे बाँधा न जाए? फिर ही उसे लूटा जा सकता है।

30 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे खिलाफ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है। 31 गरज़ मैं तुमको बताता हूँ कि इनसान का हर गुनाह और कुफ़र मुआफ़ किया जा सकेगा सिवाए रूहल-कुद्स के खिलाफ़ कुफ़र बकने के। इसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा। 32 जो इब्ने-आदम के खिलाफ़ बात करे उसे मुआफ़

किया जा सकेगा, लेकिन जो रूहल-कुदूस के खिलाफ बात करे उसे न इस जहान में और न आनेवाले जहान में मुआफ़ किया जाएगा।

दरख्त उसके फल से पहचाना जाता है

33 अच्छे फल के लिए अच्छे दरख्त की ज़रूरत होती है। खराब दरख्त से खराब फल मिलता है। दरख्त उसके फल से ही पहचाना जाता है। 34 ऐ सॉप के बच्चो! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी बातें कर सकते हो? क्योंकि जिस चीज़ से दिल लबरेज़ होता है वह छलककर ज़बान पर आ जाती है। 35 अच्छा शख्स अपने दिल के अच्छे खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है जबकि बुरा शख्स अपने बुरे खज़ाने से बुरी चीज़ें।

36 मैं तुमको बताता हूँ कि क्रियामत के दिन लोगों को बेपरवाई से की गई हर बात का हिसाब देना पड़ेगा। 37 तुम्हारी अपनी बातों की बिना पर तुमको रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।”

इलाही निशान का तकाज़ा

38 फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों ने ईसा से बात की, “उस्ताद, हम आपकी तरफ से इलाही निशान देखना चाहते हैं।”

39 उसने जवाब दिया, “सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तकाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनस नबी के निशान के। 40 क्योंकि जिस तरह यूनस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा उसी तरह इब्ने-आदम भी तीन दिन और तीन रात ज़मीन की गोद में पड़ा रहेगा। 41 क्रियामत के दिन नीनवा के बाशिंदे इस नसल के साथ खड़े होकर इसे मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूनस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनस से भी बड़ा है। 42 उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका भी इस नसल के साथ खड़ी होकर इसे मुजरिम करार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

बदरूह की वापसी

43 जब कोई बदरूह किसी शख्स से निकलती है तो वह वीरान इलाकों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मकाम नहीं मिलता 44 तो वह कहती है, “मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें

से निकली थी।' वह वापस आकर देखती है कि घर खाली है और किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीके से रख दिया है। 45 फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँड लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है। इस शरीर नसल का भी यही हाल होगा।”

ईसा की माँ और भाई

46 ईसा अभी हुज़ूम से बात कर ही रहा था कि उस की माँ और भाई बाहर खड़े उससे बात करने की कोशिश करने लगे। 47 किसी ने ईसा से कहा, “आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे बात करना चाहते हैं।”

48 ईसा ने पूछा, “कौन है मेरी माँ और कौन हैं मेरे भाई?” 49 फिर अपने हाथ से शागिर्दों की तरफ़ इशारा करके उसने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 50 क्योंकि जो भी मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

13

बीज बोनेवाले की तमसील

1 उसी दिन ईसा घर से निकलकर झील के किनारे बैठ गया। 2 इतना बड़ा हुज़ूम उसके गिर्द जमा हो गया कि आखिरकार वह एक कशती में बैठ गया जबकि लोग किनारे पर खड़े रहे। 3 फिर उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सुनाई।

“एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिंदों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए सूख गए। 7 कुछ खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन खुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने न दिया। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रखेज़ ज़मीन में गिरे और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक ज़्यादा फल लाए। 9 जो सुन सकता है वह सुन ले!”

तमसीलों का मक़सद

10 शागिर्द उसके पास आकर पूछने लगे, “आप लोगों से तमसीलों में बात क्यों करते हैं?”

11 उसने जवाब दिया, “तुमको तो आसमान की बादशाही के भेद समझने की लियाकत दी गई है, लेकिन उन्हें यह लियाकत नहीं दी गई। 12 जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीजें होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 13 इसलिए मैं तमसीलों में उनसे बात करता हूँ। क्योंकि वह देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते हुए कुछ नहीं सुनते और कुछ नहीं समझते। 14 उनमें यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :

‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।

15 क्योंकि इस कौम का दिल बेहिस हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ रूजू करें
और मैं उन्हें शफा दूँ।’

16 लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्योंकि वह देख सकती हैं और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्योंकि वह सुन सकते हैं। 17 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम देख रहे हो बहुत-से नबी और रास्तबाज़ इसे देख न पाए अगरचे वह इसके आरज़ूमंद थे। और जो कुछ तुम सुन रहे हो इसे वह सुनने न पाए, अगरचे वह इसके खाहिशमंद थे।

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

18 अब सुनो कि बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब क्या है। 19 रास्ते पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो बादशाही का कलाम सुनते तो हैं, लेकिन उसे समझते नहीं। फिर इबलीस आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनके दिलों में बोया गया

है। 20 पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे खुशी से क़बूल तो कर लेते हैं, 21 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और इसलिए ज़्यादा देर तक कायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ तो वह बरग़श्ता हो जाते हैं। 22 खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ और दौलत का फ़रेब कलाम को फलने फूलने नहीं देता। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 23 इसके मुकाबले में ज़रखेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनकर उसे समझ लेते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

खुदरौ पौदों की तमसील

24 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही उस किसान से मुताबिक़त रखती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बो दिया। 25 लेकिन जब लोग सो रहे थे तो उसके दुश्मन ने आकर अनाज के पौदों के दरमियान खुदरौ पौदों का बीज बो दिया। फिर वह चला गया। 26 जब अनाज फूट निकला और फ़सल पकने लगी तो खुदरौ पौदे भी नज़र आए। 27 नौकर मालिक के पास आए और कहने लगे, ‘जनाब, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तो फिर यह खुदरौ पौदे कहाँ से आ गए हैं?’

28 उसने जवाब दिया, ‘किसी दुश्मन ने यह कर दिया है।’

नौकरों ने पूछा, ‘क्या हम जाकर उन्हें उखाड़ें?’

29 ‘नहीं,’ उसने कहा। ‘ऐसा न हो कि खुदरौ पौदों के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी उखाड़ डालो। 30 उन्हें फ़सल की कटाई तक मिलकर बढ़ने दो। उस वक़्त मैं फ़सल की कटाई करनेवालों से कहूँगा कि पहले खुदरौ पौदों को चुन लो और उन्हें जलाने के लिए गठों में बाँध लो। फिर ही अनाज को जमा करके गोदाम में लाओ।’”

राई के दाने की तमसील

31 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही राई के दाने की मानिंद है जो किसी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। 32 गो यह बीजों में सबसे छोटा दाना है, लेकिन बढ़ते बढ़ते यह सब्जियों में सबसे बड़ा हो जाता है। बल्कि

यह दरख्त-सा बन जाता है और परिदे आकर उस की शाखों में घोंसले बना लेते हैं।”

खमीर की तमसील

33 उसने उन्हें एक और तमसील भी सुनाई। “आसमान की बादशाही खमीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर तकरीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुंधे हुए आटे को खमीर बना दिया।”

तमसीलों में बात करने का सबब

34 ईसा ने यह तमाम बातें हूजूम के सामने तमसीलों की सूत में कीं। तमसील के बगैर उसने उनसे बात ही नहीं की। 35 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “मैं तमसीलों में बात करूँगा, मैं दुनिया की तखलीक से लेकर आज तक छुपी हुई बातें बयान करूँगा।”

खुदरौ पौदों की तमसील का मतलब

36 फिर ईसा हूजूम को खसत करके घर के अंदर चला गया। उसके शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे, “खेत में खुदरौ पौदों की तमसील का मतलब हमें समझाएँ।”

37 उसने जवाब दिया, “अच्छा बीज बोनेवाला इब्ने-आदम है। 38 खेत दुनिया है जबकि अच्छे बीज से मुराद बादशाही के फरजंद हैं। खुदरौ पौदे इबलीस के फरजंद हैं 39 और उन्हें बोनेवाला दुश्मन इबलीस है। फसल की कटाई का मतलब दुनिया का इखिताम है जबकि फसल की कटाई करनेवाले फरिश्ते हैं। 40 जिस तरह तमसील में खुदरौ पौदे उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते हैं उसी तरह दुनिया के इखिताम पर भी किया जाएगा। 41 इब्ने-आदम अपने फरिश्तों को भेज देगा, और वह उस की बादशाही से बरगशतगी का हर सबब और शरीअत की खिलाफवर्ज़ी करनेवाले हर शख्स को निकालते जाएंगे। 42 वह उन्हें भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे। 43 फिर रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है वह सुन ले!”

छुपे हुए खजाने की तमसील

44 आसमान की बादशाही खेत में छुपे खजाने की मानिंद है। जब किसी आदमी को उसके बारे में मालूम हुआ तो उसने उसे दुबारा छुपा दिया। फिर वह खुशी के

मारे चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस खेत को ख़रीद लिया।

मोती की तमसील

45 नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर की मानिंद है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था। 46 जब उसे एक निहायत कीमती मोती के बारे में मालूम हुआ तो वह चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस मोती को ख़रीद लिया।

जाल की तमसील

47 आसमान की बादशाही जाल की मानिंद भी है। उसे झील में डाला गया तो हर किस्म की मछलियाँ पकड़ी गईं। 48 जब वह भर गया तो मछेरों ने उसे किनारे पर खींच लिया। फिर उन्होंने बैठकर काबिले-इस्तेमाल मछलियाँ चुनकर टोक़रियों में डाल दीं और नाकाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ फेंक दीं। 49 दुनिया के इख़िताम पर ऐसा ही होगा। फ़रिश्ते आएँगे और बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से अलग करके 50 उन्हें भडकती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।”

नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51 ईसा ने पूछा, “क्या तुमको इन तमाम बातों की समझ आ गई है?”

“जी,” शागिर्दों ने जवाब दिया।

52 उसने उनसे कहा, “इसलिए शरीअत का हर आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन गया है ऐसे मालिके-मकान की मानिंद है जो अपने ख़ज़ाने से नए और पुराने जवाहर निकालता है।”

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53 यह तमसीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से चला गया। 54 अपने वतनी शहर नासरत पहुँचकर वह इबादतख़ाने में लोगों को तालीम देने लगा। उस की बातें सुनकर वह हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, “उसे यह हिकमत और मोजिज़े करने की यह कुदरत कहाँ से हासिल हुई है? 55 क्या यह बढई का बेटा नहीं है? क्या उस की माँ का नाम मरियम नहीं है, और क्या उसके भाई याक़ूब, यूसुफ़, शमौन और यहूदा नहीं हैं? 56 क्या उस की बहनें हमारे साथ नहीं रहती? तो फिर उसे यह सब कुछ कहाँ से मिल गया?” 57 यों वह उससे ठोकर खाकर उसे क़बूल करने से कासिर रहे।

ईसा ने उनसे कहा, “नबी की इज्जत हर जगह की जाती है सिवाए उसके वतनी शहर और उसके अपने खानदान के।” 58 और उनके ईमान की कमी के बाइस उसने वहाँ ज्यादा मोजिजे न किए।

14

यहया का कत्ल

1 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस अंतिपास को ईसा के बारे में इत्ला मिली। 2 इस पर उसने अपने दरबारियों से कहा, “यह यहया बपतिस्मा देनेवाला है जो मुरदों में से जी उठा है, इसलिए उस की मोजिजाना ताकतें इसमें नज़र आती हैं।”

3 वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को गिरिफ़्तार करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास की खातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी। 4 यहया ने हेरोदेस को बताया था, “हेरोदियास से तेरी शादी नाजायज़ है।” 5 हेरोदेस यहया को कत्ल करना चाहता था, लेकिन अवाम से डरता था क्योंकि वह उसे नबी समझते थे।

6 हेरोदेस की सालगिरह के मौके पर हेरोदियास की बेटी उनके सामने नाची। हेरोदेस को उसका नाचना इतना पसंद आया 7 कि उसने कसम खाकर उससे वादा किया, “जो भी तू माँगेगी मैं तुझे दूँगा।”

8 अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, “मुझे यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में माँगा दें।”

9 यह सुनकर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन अपनी कसमों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से उसने उसे देने का हुक्म दे दिया। 10 चुनौचे यहया का सर कलम कर दिया गया। 11 फिर ट्रे में रखकर अंदर लाया गया और लड़की को दे दिया गया। लड़की उसे अपनी माँ के पास ले गई। 12 बाद में यहया के शागिर्द आए और उस की लाश लेकर उसे दफ़नाया। फिर वह ईसा के पास गए और उसे इत्ला दी।

ईसा 5000 मर्दों को खाना खिलाता है

13 यह ख़बर सुनकर ईसा लोगों से अलग होकर कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हुज़ूम को उस की ख़बर मिली। लोग पैदल चलकर शहरों से निकल आए और उसके पीछे लग गए। 14 जब ईसा ने कश्ती

पर से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर बड़ा तरस आया। वहीं उसने उनके मरीजों को शफा दी।

15 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है। इनको स्रखसत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द के देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ खरीद लें।”

16 ईसा ने जवाब दिया, “इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम खुद इन्हें खाने को दो।”

17 उन्होंने जवाब दिया, “हमारे पास सिर्फ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।”

18 उसने कहा, “उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ,” 19 और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया। ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ देखा और शक्रगुजारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ लोगों में तकसीम कर दीं। 20 सबने जी भरकर खाया। जब शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए। 21 खवातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले तकरीबन 5,000 मर्द थे।

ईसा पानी पर चलता है

22 इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम को स्रखसत करना चाहता था। 23 उन्हें खैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए अकेला पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला था 24 जबकि कश्ती किनारे से काफ़ी दूर हो गई थी। लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रही थीं क्योंकि हवा उसके खिलाफ़ चल रही थी।

25 तकरीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। 26 जब शागिर्दों ने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो उन्होंने दहशत खाई। “यह कोई भूत है,” उन्होंने कहा और डर के मारे चीखें मारने लगे।

27 लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुखातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।”

28 इस पर पतरस बोल उठा, “खुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “आ।” पतरस कश्ती पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ बढ़ने लगा। 30 लेकिन जब उसने तेज़ हवा पर गौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा, “खुदावंद, मुझे बचाएँ!”

31 ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। उसने कहा, “ऐ कमएतक्राद! तू शक में क्यों पड़ गया था?”

32 दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई। 33 फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा करके कहा, “यक्रीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं!”

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

34 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए। 35 जब उस जगह के लोगों ने ईसा को पहचान लिया तो उन्होंने इर्दगिर्द के पूरे इलाके में इसकी ख़बर फैलाई। उन्होंने अपने तमाम मरीज़ों को उसके पास लाकर 36 उससे मिन्नत की कि वह उन्हें सिर्फ़ अपने लिबास के दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफ़ा मिली।

15

बापदादा की तालीम

1 फिर कुछ फ़रीसी और शरीअत के आलिम यरूशलम से आकर ईसा से पूछने लगे, 2 “आपके शागिर्द बापदादा की रिवायत क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वह हाथ धोए बग़ैर रोटी खाते हैं।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “और तुम अपनी रिवायत की खातिर अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ते हो? 4 क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।’ 5 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है कि जो कुछ मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए वक्रफ़ है’ तो तुम इसे जायज़ करार देते हो। 6 यों तुम कहते हो कि उसे अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करने की ज़रूरत नहीं है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी रिवायत की खातिर मनसूख़ कर लेते हो। 7 रियाकारो! यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या ख़ूब नबुव्वत की है,

8 ‘यह क्रौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम करती है लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।

9 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफायदा।
क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।”

इनसान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10 फिर ईसा ने हुजूम को अपने पास बुलाकर कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश करो। 11 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान के मुँह में दाखिल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।”

12 इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “क्या आपको मालूम है कि फ़रीसी यह बात सुनकर नाराज़ हुए हैं?”

13 उसने जवाब दिया, “जो भी पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से उखाड़ा जाएगा। 14 उन्हें छोड़ दो, वह अंधे राह दिखानेवाले हैं। अगर एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई करे तो दोनों गढे में गिर जाएंगे।”

15 पतरस बोल उठा, “इस तमसील का मतलब हमें बताएँ।”

16 ईसा ने कहा, “क्या तुम अभी तक इतने नासमझ हो? 17 क्या तुम नहीं समझ सकते कि जो कुछ इनसान के मुँह में दाखिल हो जाता है वह उसके मेदे में जाता है और वहाँ से निकलकर जाए-ज़रूरत में? 18 लेकिन जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही इनसान को नापाक करता है। 19 दिल ही से बुरे खयालात, क्रल्लो-गारत, जिनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूटी गवाही और बुहतान निकलते हैं। 20 यही कुछ इनसान को नापाक कर देता है, लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना खाने से वह नापाक नहीं होता।”

गैरयहूदी औरत का ईमान

21 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर और सैदा के इलाक़े में आया। 22 इस इलाक़े की एक कनानी खातून उसके पास आकर चिल्लाने लगी, “खुदावंद, इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें। एक बदर्ह मेरी बेटी को बहुत सताती है।”

23 लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ़ज़ भी न कहा। इस पर उसके शागिर्द उसके पास आकर उससे गुज़ारिश करने लगे, “उसे फ़ारिग कर दें, क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे चीखती-चिल्लाती है।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “मुझे सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।”

25 औरत उसके पास आकर मुँह के बल झुक गई और कहा, “खुदावंद, मेरी मदद करें!”

26 उसने उसे बताया, “यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।”

27 उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, लेकिन कुत्ते भी वह टुकड़े खाते हैं जो उनके मालिक की मेज़ पर से फ़र्श पर गिर जाते हैं।”

28 ईसा ने कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी दरखास्त पूरी हो जाए।” उसी लमहे औरत की बेटी को शफ़ा मिल गई।

ईसा बहुत-से मरीजों को शफ़ा देता है

29 फिर ईसा वहाँ से रवाना होकर गलील की झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। 30 लोगों की बड़ी तादाद उसके पास आई। वह अपने लँगड़े, अंधे, मफ़लूज़, गूँगे और कई और किस्म के मरीज़ भी साथ ले आए। उन्होंने उन्हें ईसा के सामने रखा तो उसने उन्हें शफ़ा दी। 31 हुज़ूम हैरतज़दा हो गया। क्योंकि गूँगे बोल रहे थे, अपाहजों के आज्ञा बहाल हो गए, लँगड़े चलने और अंधे देखने लगे थे। यह देखकर भीड़ ने इसराईल के खुदा की तमज़ीद की।

ईसा 4000 मर्दों को खाना खिलाता है

32 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें इस भूकी हालत में सखसत नहीं करना चाहता। ऐसा न हो कि वह रास्ते में थककर चूर हो जाएँ।”

33 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाके में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह लोग खाकर सेर हो जाएँ?”

34 ईसा ने पृछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “सात, और चंद एक छोटी मछलियाँ।”

35 ईसा ने हुज़ूम को ज़मीन पर बैठने को कहा। 36 फिर सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने शक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तकसीम करने के लिए दे दिया। 37 सबने जी भरकर खाया। बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए। 38 खवातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले 4,000 मर्द थे।

39 फिर ईसा लोगों को सूखसत करके कशती पर सवार हुआ और मगदन के इलाके में चला गया।

16

फरीसी इलाही निशान का तकाजा करते हैं

1 एक दिन फरीसी और सदूकी ईसा के पास आए। उसे परखने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख्तियार साबित हो जाए। 2 लेकिन उसने जवाब दिया, “शाम को तुम कहते हो, ‘कल मौसम साफ होगा क्योंकि आसमान सुर्ख नज़र आता है।’ 3 और सुबह के वक़्त कहते हो, ‘आज तूफ़ान होगा क्योंकि आसमान सुर्ख है और बादल छाए हुए हैं।’ गरज़ तुम आसमान की हालत पर गौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो, लेकिन ज़मानों की अलामतों पर गौर करके सहीह नतीजे तक पहुँचना तुम्हारे बस की बात नहीं है। 4 सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तकाजा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान के।”

यह कहकर ईसा उन्हें छोड़कर चला गया।

फरीसियों और सदूकियों का खमीर

5 झील को पार करते वक़्त शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। 6 ईसा ने उनसे कहा, “खबरदार, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से होशियार रहना।”

7 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह इसलिए कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं लाए।”

8 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? 9 क्या तुम अभी तक नहीं समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने पाँच रोटियाँ लेकर 5,000 आदमियों को खाना खिला दिया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? 10 या क्या तुम भूल गए हो कि मैंने सात रोटियाँ लेकर 4,000 आदमियों को खाना खिलाया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? 11 तुम क्यों नहीं समझते कि मैं तुमसे खाने की बात नहीं कर रहा? सुनो मेरी बात! फरीसियों और सदूकियों के खमीर से होशियार रहो!”

12 फिर उन्हें समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी के खमीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि फ़रीसियों और सदूकियों की तालीम से।

पतरस का इकरार

13 जब ईसा कैसरिया-फ़िलिप्पी के इलाके में पहुँचा तो उसने शागिर्दों से पूछा, “इब्ने-आदम लोगों के नज़दीक कौन है?”

14 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि यरमियाह या नबियों में से एक।”

15 उसने पूछा, “लेकिन तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

16 पतरस ने जवाब दिया, “आप ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं।”

17 ईसा ने कहा, “शमौन बिन यूनस, तू मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह जाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने। 18 मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे। 19 मैं तुझे आसमान की बादशाही की कुंजियाँ दे दूँगा। जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वह आसमान पर भी बाँधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वह आसमान पर भी खुलेगा।”

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया, “किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।”

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह करने लगा, “लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर क्रौम के बुजुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।”

22 इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर समझाने लगा। “ऐ ख़ुदावंद, अल्लाह न करे कि यह कभी भी आपके साथ हो।”

23 ईसा ने मुड़कर पतरस से कहा, “शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।”

24 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 25 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी

जान खो दे वही उसे पा लेगा। 26 क्या फायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए? इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है? 27 क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप के जलाल में अपने फरिश्तों के साथ आएगा, और उस वक्त वह हर एक को उसके काम का बदला देगा। 28 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही इब्ने-आदम को उस की बादशाही में आते हुए देखेंगे।”

17

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

1 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। 2 वहाँ उस की शक्लो-सूरत उनके सामने बदल गई। उसका चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा, और उसके कपड़े नूर की मानिंद सफेद हो गए। 3 अचानक इलियास और मूसा ज़ाहिर हुए और ईसा से बातें करने लगे। 4 पतरस बोल उठा, “खुदावंद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। अगर आप चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।”

5 वह अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फरज़ंद है, जिससे मैं खुश हूँ। इसकी सुनो।”

6 यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह गिर गए। 7 लेकिन ईसा ने आकर उन्हें छुआ। उसने कहा, “उठो, मत डरो।” 8 जब उन्होंने नज़र उठाई तो ईसा के सिवा किसी को न देखा।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक्त तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम मुरदों में से जी न उठे।”

10 शागिर्दों ने उससे पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इलियास का आना ज़रूरी है?”

11 ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। 12 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि इलियास तो आ चुका है और उन्होंने

उसे नहीं पहचाना बल्कि उसके साथ जो चाहा किया। इसी तरह इब्ने-आदम भी उनके हाथों दुख उठाएगा।”

13 फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उनके साथ यहया बपतिस्मा देनेवाले की बात कर रहा था।

ईसा लडके में से बदरूह निकालता है

14 जब वह नीचे हुजूम के पास पहुँचे तो एक आदमी ने ईसा के सामने आकर घुटने टेके 15 और कहा, “खुदाबंद, मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिरगी के दौरै पडते हैं और उसे शदीद तकलीफ उठानी पडती है। कई बार वह आग या पानी में गिर जाता है। 16 मैं उसे आपके शागिर्दों के पास लाया था, लेकिन वह उसे शफा न दे सके।”

17 ईसा ने जवाब दिया, “ईमान से खाली और टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लडके को मेरे पास ले आओ।” 18 ईसा ने बदरूह को डॉंटा, तो वह लडके में से निकल गई। उसी लमहे उसे शफा मिल गई।

19 बाद में शागिर्दों ने अलहदगी में ईसा के पास आकर पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”

20 उसने जवाब दिया, “अपने ईमान की कमी के सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम इस पहाड को कह सकोगे, ‘इधर से उधर खिसक जा,’ तो वह खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा। 21 [लेकिन इस क्रिस्म की बदरूह दुआ और रोजे के बगैर नहीं निकलती।]”

ईसा दूसरी बार अपनी मौत का जिक्र करता है

22 जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें बताया, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा। 23 वह उसे कल्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

यह सुनकर शागिर्द निहायत गमगीन हुए।

बैतुल-मुकद्दस का टैक्स

24 वह कफर्नहम पहुँचे तो बैतुल-मुकद्दस का टैक्स जमा करनेवाले पतरस के पास आकर पूछने लगे, “क्या आपका उस्ताद बैतुल-मुकद्दस का टैक्स अदा नहीं करता?”

25 “जी, वह करता है,” पतरस ने जवाब दिया। वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा, “क्या खयाल है शमौन, दुनिया के बादशाह किनसे झूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़रज़ंदों से या अजनबियों से?”

26 पतरस ने जवाब दिया, “अजनबियों से।”

ईसा बोला “तो फिर उनके फ़रज़ंद टैक्स देने से बरी हुए। 27 लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहते। इसलिए झील पर जाकर उसमें डोरी डाल देना। जो मछली तू पहले पकड़ेगा उसका मुँह खोलना तो उसमें से चाँदी का सिक्का निकलेगा। उसे लेकर उन्हें मेरे और अपने लिए अदा कर दे।”

18

कौन सबसे बड़ा है?

1 उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आकर पूछने लगे, “आसमान की बादशाही में कौन सबसे बड़ा है?”

2 जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुलाकर उनके दरमियान खड़ा किया 3 और कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ अगर तुम बदलकर छोटे बच्चों की मानिंद न बनो तो तुम कभी आसमान की बादशाही में दाखिल नहीं होगे। 4 इसलिए जो भी अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा वह आसमान में सबसे बड़ा होगा। 5 और जो भी मेरे नाम में इस जैसे छोटे बच्चे को कबूल करे वह मुझे कबूल करता है।

आज़माइशें

6 लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंद्र की गहराइयों में डुबो दिया जाए। 7 दुनिया पर उन चीज़ों की वजह से अफ़सोस जो गुनाह करने पर उकसाती हैं। लाज़िम है कि ऐसी आज़माइशें आएँ, लेकिन उस शख्स पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त वह आएँ।

8 अगर तेरा हाथ या पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक देना। इससे पहले कि तुझे दो हाथों या दो पाँवों समेत जहन्नुम की अबदी आग में फेंका जाए, बेहतर यह है कि एक हाथ या पाँव से महसूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो। 9 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर

फेंक देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की आग में फेंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो।

खोई हुई भेड़ की तमसील

10 खबरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी हकीर न जानना। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर इनके फ़रिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के चेहरे को देखते रहते हैं। 11 [क्योंकि इब्ने-आदम खोए हुआओं को ढूँढने और नजात देने आया है।]

12 तुम्हारा क्या खयाल है? अगर किसी आदमी की 100 भेड़ें हों और एक भटककर गुम हो जाए तो वह क्या करेगा? क्या वह बाकी 99 भेड़ें पहाड़ी इलाके में छोड़कर भटकी हुई भेड़ को ढूँढने नहीं जाएगा? 13 और मैं तुमको सच बताता हूँ कि भटकी हुई भेड़ के मिलने पर वह उसके बारे में उन बाकी 99 भेड़ों की निसबत कहीं ज़्यादा खुशी मनाएगा जो भटकी नहीं। 14 बिलकुल इसी तरह आसमान पर तुम्हारा बाप नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक हो जाए।

गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

15 अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो अकेले उसके पास जाकर उस पर उसका गुनाह ज़ाहिर कर। अगर वह तेरी बात माने तो तूने अपने भाई को जीत लिया। 16 लेकिन अगर वह न माने तो एक या दो और लोगों को अपने साथ ले जा ताकि तुम्हारी हर बात की दो या तीन गवाहों से तसदीक हो जाए। 17 अगर वह उनकी बात भी न माने तो जमात को बता देना। और अगर वह जमात की भी न माने तो उसके साथ गैरइमानदार या टैक्स लेनेवाले का-सा सुलूक कर।

बाँधने और खोलने का इख्तियार

18 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बाँधेगा, और जो कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा।

19 मैं तुमको यह भी बताता हूँ कि अगर तुममें से दो शख्स किसी बात को माँगने पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ तो मेरा आसमानी बाप तुमको बख़्शेगा। 20 क्योंकि जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा।”

मुआफ़ न करनेवाले नौकर की तमसील

21 फिर पतरस ने ईसा के पास आकर पूछा, “खुदावंद, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं कितनी बार उसे मुआफ करूँ? सात बार तक?”

22 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे बताता हूँ, सात बार नहीं बल्कि 77 बार।

23 इसलिए आसमान की बादशाही एक बादशाह की मानिंद है जो अपने नौकरों के कर्जों का हिसाब-किताब करना चाहता था। 24 हिसाब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी उसके सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब से उसका कर्जदार था। 25 वह यह रकम अदा न कर सका, इसलिए उसके मालिक ने यह कर्ज वसूल करने के लिए हुकम दिया कि उसे बाल-बच्चों और तमाम मिलकियत समेत फरोख्त कर दिया जाए। 26 यह सुनकर नौकर मुँह के बल गिरा और मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं पूरी रकम अदा कर दूँगा।’ 27 बादशाह को उस पर तरस आया। उसने उसका कर्ज मुआफ करके उसे जाने दिया।

28 लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो एक हमखिदमत मिला जो उसका चंद हजार रूपों का कर्जदार था। उसे पकड़कर वह उसका गला दबाकर कहने लगा, ‘अपना कर्ज अदा कर!’ 29 दूसरा नौकर गिरकर मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं आपको सारी रकम अदा कर दूँगा।’ 30 लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ, बल्कि जाकर उसे उस वक़्त तक जेल में डलवाया जब तक वह पूरी रकम अदा न कर दे। 31 जब बाक़ी नौकरों ने यह देखा तो उन्हें शदीद दुख हुआ और उन्होंने अपने मालिक के पास जाकर सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 32 इस पर मालिक ने उस नौकर को अपने पास बुला लिया और कहा, ‘शरीर नौकर! जब तूने मेरी मिन्नत की तो मैंने तेरा पूरा कर्ज मुआफ कर दिया। 33 क्या लाज़िम न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम करता जितना मैंने तुझ पर किया था?’ 34 गुस्से में मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर दिया ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया जाए जब तक वह कर्ज की पूरी रकम अदा न कर दे।

35 मेरा आसमानी बाप तुममें से हर एक के साथ भी ऐसा ही करेगा अगर तुमने अपने भाई को पूरे दिल से मुआफ न किया।”

19

तलाक़ के बारे में तालीम

1 यह कहने के बाद ईसा गलील को छोड़कर यहूदिया में दरियाए-यरदन के पार चला गया। 2 बड़ा हज़ूम उसके पीछे हो लिया और उसने उन्हें वहाँ शफ़ा दी।

3 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की गरज़ से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को किसी भी वजह से तलाक़ दे?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कलामे-मुक़द्दस में नहीं पढ़ा कि इब्तिदा में ख़ालिक ने उन्हें मर्द और औरत बनाया? 5 और उसने फ़रमाया, ‘इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।’ 6 यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह ने जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”

7 उन्होंने एतराज़ किया, “तो फिर मूसा ने यह क्यों फ़रमाया कि आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को सूखसत कर दे?”

8 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुमको अपनी बीवी को तलाक़ देने की इजाज़त दी। लेकिन इब्तिदा में ऐसा न था। 9 मैं तुम्हें बताता हूँ, जो अपनी बीवी को जिसने ज़िना न किया हो तलाक़ दे और किसी और से शादी करे, वह ज़िना करता है।”

10 शागिर्दों ने उससे कहा, “अगर शौहर और बीवी का आपस का ताल्लुक़ ऐसा है तो शादी न करना बेहतर है।”

11 ईसा ने जवाब दिया, “हर कोई यह बात समझ नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ वह जिसे इस क़ाबिल बना दिया गया हो। 12 क्योंकि कुछ पैदाइश ही से शादी करने के क़ाबिल नहीं होते, बाज़ को दूसरों ने यों बनाया है और बाज़ ने आसमान की बादशाही की ख़ातिर शादी करने से इनकार किया है। लिहाज़ा जो यह समझ सके वह समझ ले।”

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया गया ताकि वह उन पर अपने हाथ रखकर दुआ करे। लेकिन शागिर्दों ने लानेवालों को मलामत की। 14 यह देखकर ईसा ने कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि आसमान की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।”

15 उसने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ से चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

16 फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उसने कहा, “उस्ताद, मैं कौन-सा नेक काम करूँ ताकि अबदी ज़िंदगी मिल जाए?”

17 ईसा ने जवाब दिया, “तू मुझे नेकी के बारे में क्यों पूछ रहा है? सिर्फ एक ही नेक है। लेकिन अगर तू अबदी जिंदगी में दाखिल होना चाहता है तो अहकाम के मुताबिक जिंदगी गुज़ार।”

18 आदमी ने पूछा, “कौन-से अहकाम?”

ईसा ने जवाब दिया, “कत्ल न करना, जिना न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, 19 अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना और अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।”

20 जवान आदमी ने जवाब दिया, “मैंने इन तमाम अहकाम की पैरवी की है, अब क्या रह गया है?”

21 ईसा ने उसे बताया, “अगर तू कामिल होना चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख्त करके पैसे गरीबों में तकसीम कर दे। फिर तैरे लिए आसमान पर खज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।”

22 यह सुनकर नौजवान मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

23 इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि दौलतमंद के लिए आसमान की बादशाही में दाखिल होना मुश्किल है। 24 मैं यह दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान की बादशाही में दाखिल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

25 यह सुनकर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए और पूछने लगे, “फिर किस को नजात हासिल हो सकती है?”

26 ईसा ने गौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब दिया, “यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।”

27 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं। हमें क्या मिलेगा?”

28 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, दुनिया की नई तखलीक़ पर जब इब्ने-आदम अपने जलाली तख़्त पर बैठेगा तो तुम भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है बारह तख़्तों पर बैठकर इसराइल के बारह कबीलों की अदालत करोगे। 29 और जिसने भी मेरी खातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों, बाप, माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ गुना ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी जिंदगी पाएगा।

30 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अक्वल हैं उस वकत आखिर होंगे और जो अब आखिर हैं वह अक्वल होंगे।

20

अंगूर के बाग में मजदूर

1 क्योंकि आसमान की बादशाही उस ज़मीनदार से मुताबिकत रखती है जो एक दिन सुबह-सवेरे निकला ताकि अपने अंगूर के बाग के लिए मजदूर ढूँडे। 2 वह उनसे दिहाड़ी के लिए चाँदी का एक सिक्का देने पर मुतफिक्र हुआ और उन्हें अपने अंगूर के बाग में भेज दिया। 3 नौ बजे वह दुबारा निकला तो देखा कि कुछ लोग अभी तक मंडी में फ़ारिग बैठे हैं। 4 उसने उनसे कहा, 'तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग में काम करो। मैं तुम्हें मुनासिब उजरत दूँगा।' 5 चुनाँचे वह काम करने के लिए चले गए। बारह बजे और तीन बजे दोपहर के वक़्त भी वह निकला और इस तरह के फ़ारिग मजदूरों को काम पर लगाया। 6 फिर शाम के पाँच बज गए। वह निकला तो देखा कि अभी तक कुछ लोग फ़ारिग बैठे हैं। उसने उनसे पूछा, 'तुम क्यों पूरा दिन फ़ारिग बैठे रहे हो?' 7 उन्होंने जवाब दिया, 'इसलिए कि किसी ने हमें काम पर नहीं लगाया।' उसने उनसे कहा, 'तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग में काम करो।'

8 दिन ढल गया तो ज़मीनदार ने अपने अफ़सर को बताया, 'मजदूरों को बुलाकर उन्हें मजदूरी दे दे, आखिर में आनेवालों से शुरू करके पहले आनेवालों तक।' 9 जो मजदूर पाँच बजे आए थे उन्हें चाँदी का एक एक सिक्का मिल गया। 10 इसलिए जब वह आए जो पहले काम पर लगाए गए थे तो उन्होंने ज़्यादा मिलने की तवक्को की। लेकिन उन्हें भी चाँदी का एक एक सिक्का मिला। 11 इस पर वह ज़मीनदार के खिलाफ़ बुडबुडाने लगे, 12 'यह आदमी जिन्हें आखिर में लगाया गया उन्होंने सिर्फ़ एक घंटा काम किया। तो भी आपने उन्हें हमारे बराबर की मजदूरी दी हालाँकि हमें दिन का पूरा बोझ और धूप की शिदत बरदाश्त करनी पड़ी।' 13

13 लेकिन ज़मीनदार ने उनमें से एक से बात की, 'यार, मैंने ग़लत काम नहीं किया। क्या तू चाँदी के एक सिक्के के लिए मजदूरी करने पर मुतफिक्र न हुआ था? 14 अपने पैसे लेकर चला जा। मैं आखिर में काम पर लगनेवालों को उतना ही देना चाहता हूँ जितना तुझे। 15 क्या मेरा हक़ नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने पैसे खर्च करूँ? या क्या तू इसलिए हसद करता है कि मैं फ़ैयाजदिल हूँ?'

16 यों अब्बल आखिर में आँगे और जो आखिरी हैं वह अब्बल हो जाएंगे।”

ईसा तीसरी मरतबा अपनी मौत का जिक्र करता है

17 अब जब ईसा यरूशलम की तरफ बढ़ रहा था तो बारह शागिर्दों को एक तरफ ले जाकर उसने उनसे कहा, 18 “हम यरूशलम की तरफ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सजाए-मौत का फतवा देकर 19 उसे गैरयहूदियों के हवाले कर देंगे ताकि वह उसका मजाक उड़ाएँ, उसको कोड़े मारें और उसे मसलूब करें। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

याकूब और यूहन्ना की माँ की गुजारिश

20 फिर ज़बदी के बेटों याकूब और यूहन्ना की माँ अपने बेटों को साथ लेकर ईसा के पास आई और सिजदा करके कहा, “आपसे एक गुजारिश है।”

21 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहती है?”

उसने जवाब दिया, “अपनी बादशाही में मेरे इन बेटों में से एक को अपने दाँएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाँएँ हाथ।”

22 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ?”

“जी, हम पी सकते हैं,” उन्होंने जवाब दिया।

23 फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम मेरा प्याला तो ज़रूर पियोगे, लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाँएँ हाथ बैठेगा और कौन बाँएँ हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने खुद मुकर्रर किया है।”

24 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याकूब और यूहन्ना पर गुस्सा आया। 25 इस पर ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि कौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने इख्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 26 लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा खादिम बने 27 और जो तुममें अब्बल होना चाहे वह तुम्हारा गुलाम बने। 28 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान फ़िघा के तौर पर देकर बहुतों को छुड़ाए।”

दो अंधों की शफा

29 जब वह यरीह शहर से निकलने लगे तो एक बड़ा हुजूम उनके पीछे चल रहा था। 30 दो अंधे रास्ते के किनारे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि ईसा गुज़र रहा है तो वह चिल्लाने लगे, “खुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

31 हुजूम ने उन्हें डाँटकर कहा, “खामोश!” लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे, “खुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

32 ईसा स्क्र गया। उसने उन्हें अपने पास बुलाया और पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”

33 उन्होंने जवाब दिया, “खुदावंद, यह कि हम देख सकें।”

34 ईसा को उन पर तरस आया। उसने उनकी आँखों को छुआ तो वह फौरन बहाल हो गईं। फिर वह उसके पीछे चलने लगे।

21

यरूशलम में पुरजोश इस्तक्रबाल

1 वह यरूशलम के करीब बैत-फगे पहुँचे। यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर वाके था। ईसा ने दो शागिर्दों को भेजा 2 और कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुमको फौरन एक गधी नज़र आएगी जो अपने बच्चे के साथ बँधी हुई होगी। उन्हें खोलकर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई यह देखकर तुमसे कुछ कहे तो उसे बता देना, ‘खुदावंद को इनकी ज़रूरत है।’ यह सुनकर वह फौरन इन्हें भेज देगा।”

4 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

5 ‘सियून बेटी को बता देना,

देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।

वह हलीम है और गधे पर,

हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।’

6 दोनों शागिर्द चले गए। उन्होंने वैसा ही किया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था।

7 वह गधी को बच्चे समेत ले आए और अपने कपड़े उन पर रख दिए। फिर ईसा उन पर बैठ गया। 8 जब वह चल पड़ा तो बहुत ज़्यादा लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने शाखें भी उसके आगे आगे रास्ते में बिछा दीं जो उन्होंने दरख्तों से काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्लाकर यह नारे लगा रहे थे,

“इब्ने-दाऊद को होशाना! * ”

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।

आसमान की बुलंदियों पर होशाना।” †

10 जब ईसा यरूशलम में दाखिल हुआ तो पूरा शहर हिल गया। सबने पूछा, “यह कौन है?”

11 हुजूम ने जवाब दिया, “यह ईसा है, वह नबी जो गलील के नासरत से है।”

ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाता है

12 और ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाकर उन सबको निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरकार चीजों की खरीदो-फरोख्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेजें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियाँ उलट दी 13 और उनसे कहा, “कलामे-मुकद्दस में लिखा है, ‘मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।’ लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”

14 अंधे और लँगड़े बैतुल-मुकद्दस में उसके पास आए और उसने उन्हें शफा दी। 15 लेकिन राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा नाराज़ हुए जब उन्होंने उसके हैरतअंगेज़ काम देखे और यह कि बच्चे बैतुल-मुकद्दस में “इब्ने-दाऊद को होशाना” चिल्ला रहे हैं। 16 उन्होंने उससे पूछा, “क्या आप सुन रहे हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे हैं?”

“जी,” ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कलामे-मुकद्दस में कभी नहीं पढ़ा कि ‘तूने छोटे बच्चों और शीरखारों की ज़बान को तैयार किया है ताकि वह तेरी तमज़ीद करें?’”

17 फिर वह उन्हें छोड़कर शहर से निकला और बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उसने रात गुज़ारी।

अंजीर के दरख्त पर लानत

18 अगले दिन सुबह-सवेरे जब वह यरूशलम लौट रहा था तो ईसा को भूक लगी। 19 रास्ते के करीब अंजीर का एक दरख्त देखकर वह उसके पास गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि फल नहीं लगा बल्कि सिर्फ पत्ते ही पत्ते

* 21:9 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है। † 21:9 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

हैं। इस पर उसने दरख्त से कहा, “अब से कभी भी तुझमें फल न लगे!” दरख्त फौरन सूख गया।

20 यह देखकर शागिर्द हैरान हुए और कहा, “अंजीर का दरख्त इतनी जल्दी से किस तरह सूख गया?”

21 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो फिर तुम न सिर्फ़ ऐसा काम कर सकोगे बल्कि इससे भी बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, ‘उठ, अपने आपको समुंद्र में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा।

22 अगर तुम ईमान रखो तो जो कुछ भी तुम दुआ में माँगोगे वह तुमको मिल जाएगा।”

किसने ईसा को इख्तियार दिया?

23 ईसा बैतुल-मुकद्दस में दाखिल होकर तालीम देने लगा। इतने में राहनुमा इमाम और क्रौम के बुजुर्ग उसके पास आए और पूछा, “आप यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह इख्तियार दिया है?”

24 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस इख्तियार से कर रहा हूँ। 25 मुझे बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से था—क्या वह आसमानी था या इनसानी?”

वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’ 26 लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था? हम तो आम लोगों से डरते हैं, क्योंकि वह सब मानते हैं कि यहया नबी था।” 27 चुनौचे उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहा हूँ।

दो बेटों की तमसील

28 तुम्हारा क्या खयाल है? एक आदमी के दो बेटे थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, ‘बेटा, आज अंगूर के बाग में जाकर काम कर।’ 29 बेटे ने जवाब दिया, ‘मैं जाना नहीं चाहता,’ लेकिन बाद में उसने अपना खयाल बदल लिया और बाग में चला गया। 30 इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी गया और उसे बाग में जाने को कहा। ‘जी जनाब, मैं जाऊँगा,’ छोटे बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया। 31 अब मुझे बताओ कि किस बेटे ने अपने बाप की मरज़ी पूरी की?”

“पहले बेटे ने,” उन्होंने जवाब दिया।

ईसा ने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ तुमसे पहले अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो रहे हैं। 32 क्योंकि यहया तुमको रास्तबाज़ी की राह दिखाने आया और तुम उस पर ईमान न लाए। लेकिन टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ उस पर ईमान लाए। और यह देखकर भी तुमने अपना खयाल न बदला और उस पर ईमान न लाए।

अंगूर के बाग में मुज़ारेओं की बगावत

33 एक और तमसील सुनो। एक ज़मीनदार था जिसने अंगूर का बाग लगाया। उसने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढे की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 34 जब अंगूर को तोड़ने का वक़्त करीब आ गया तो उसने अपने नौकरों को मुज़ारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करें। 35 लेकिन मुज़ारेओं ने उसके नौकरों को पकड़ लिया। उन्होंने एक की पिटाई की, दूसरे को क़त्ल किया और तीसरे को संगसार किया। 36 फिर मालिक ने मज़ीद नौकरों को उनके पास भेज दिया जो पहले की निसबत ज्यादा थे। लेकिन मुज़ारेओं ने उनके साथ भी वही सुलूक किया। 37 आखिरकार ज़मीनदार ने अपने बेटे को उनके पास भेजा। उसने कहा, ‘आखिर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।’ 38 लेकिन बेटे को देखकर मुज़ारे एक दूसरे से कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे क़त्ल करके उस की मीरास पर कब्ज़ा कर लें।’ 39 उन्होंने उसे पकड़कर बाग से बाहर फेंक दिया और क़त्ल किया।”

40 ईसा ने पूछा, “अब बताओ, बाग का मालिक जब आएगा तो उन मुज़ारेओं के साथ क्या करेगा?”

41 उन्होंने जवाब दिया, “वह उन्हें बुरी तरह तबाह करेगा और बाग को दूसरों के सुपर्द कर देगा, ऐसे मुज़ारेओं के सुपर्द जो वक़्त पर उसे फ़सल का उसका हिस्सा देंगे।”

42 ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुमने कभी कलाम का यह हवाला नहीं पढ़ा,
‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रढ़ किया,
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है’?”

43 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की बादशाही तुमसे ले ली जाएगी और एक ऐसी क्रौम को दी जाएगी जो इसके मुताबिक फल लाएगी। 44 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह खुद गिरेगा उसे वह पीस डालेगा।”

45 ईसा की तमसीलें सुनकर राहनुमा इमाम और फरीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात कर रहा है। 46 उन्होंने ईसा को गिरिफ्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह अवाम से डरते थे क्योंकि वह समझते थे कि ईसा नबी है।

22

बड़ी ज़ियाफत की तमसील

1 ईसा ने एक बार फिर तमसीलों में उनसे बात की। 2 “आसमान की बादशाही एक बादशाह से मुताबिकत रखती है जिसने अपने बेटे की शादी की ज़ियाफत की तैयारियाँ करवाई। 3 जब ज़ियाफत का वक्त आ गया तो उसने अपने नौकरों को मेहमानों के पास यह इत्ला देने के लिए भेजा कि वह आँ, लेकिन वह आना नहीं चाहते थे। 4 फिर उसने मज़ीद कुछ नौकरों को भेजकर कहा, ‘मेहमानों को बताना कि मैंने अपना खाना तैयार कर रखा है। बैलों और मोटे-ताजे बछड़ों को ज़बह किया गया है, 5 सब कुछ तैयार है। आँ, ज़ियाफत में शरीक हो जाँ।’ लेकिन मेहमानों ने परवा न की बल्कि अपने मुख्तलिफ़ कामों में लग गए। एक अपने खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार में मसरूफ़ हो गया। 6 बाकियों ने बादशाह के नौकरों को पकड़ लिया और उनसे बुरा सुलूक करके उन्हें कत्ल किया। 7 बादशाह बड़े तैश में आ गया। उसने अपनी फ़ौज को भेजकर कातिलों को तबाह कर दिया और उनका शहर जला दिया। 8 फिर उसने अपने नौकरों से कहा, ‘शादी की ज़ियाफत तो तैयार है, लेकिन जिन मेहमानों को मैंने दावत दी थी वह आने के लायक नहीं थे। 9 अब वहाँ जाओ जहाँ सड़कें शहर से निकलती हैं और जिससे भी मुलाकात हो जाए उसे ज़ियाफत के लिए दावत दे देना।’ 10 चुनाँचे नौकर सड़कों पर निकले और जिससे भी मुलाकात हुई उसे लाए, खाह वह अच्छा था या बुरा। यों शादी हाल मेहमानों से भर गया।

11 लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के लिए अंदर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया जिसने शादी के लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने थे। 12 बादशाह ने पूछा, ‘दोस्त, तुम शादी का लिबास पहने बग़ैर अंदर किस तरह आए?’ वह आदमी कोई जवाब न दे सका। 13 फिर बादशाह ने अपने दरबारियों को हुक्म

दिया, 'इसके हाथ और पाँव बाँधकर इसे बाहर तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।'

14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने हुए कम।”

क्या टैक्स देना जायज़ है?

15 फिर फ़रीसियों ने जाकर आपस में मशवरा किया कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात करने के लिए उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके। 16 इस मक़सद के तहत उन्होंने अपने शागिर्दों को हेरोदेस के पैरोकारों समेत ईसा के पास भेजा। उन्होंने कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। आप किसी की परवा नहीं करते क्योंकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17 अब हमें अपनी राय बताएँ। क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?”

18 लेकिन ईसा ने उनकी बुरी नीयत पहचान ली। उसने कहा, “रियाकारो, तुम मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? 19 मुझे वह सिक्का दिखाओ जो टैक्स अदा करने के लिए इस्तेमाल होता है।”

वह उसके पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले आए 20 तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?”

21 उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

22 उसका यह जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का रह गए और उसे छोड़कर चले गए।

क्या हम जी उठेंगे?

23 उस दिन सदूकी ईसा के पास आए। सदूकी नहीं मानते कि रोज़े-क्रियामत मरने जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया। 24 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 25 अब फ़र्ज़ करें कि हमारे दरमियान सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। इसलिए दूसरे भाई ने बेवा से शादी की। 26 लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया।

27 आखिर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 28 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए ग़लती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाकिफ़ हो, न अल्लाह की कुदरत से। 30 क्योंकि क्रियामत के दिन लोग न शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिशतों की मानिंद होंगे। 31 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे, क्या तुमने वह बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने तुमसे कही? 32 उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याक़ूब का खुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िंदा हैं। क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का खुदा है।”

33 यह सुनकर हुज़ूम उस की तालीम के बाइस हैरान रह गया।

अव्वल हुक्म

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सदूक़ियों को लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए। 35 उनमें से एक ने जो शरीअत का आलिम था उसे फँसाने के लिए सवाल किया, 36 “उस्ताद, शरीअत में सबसे बड़ा हुक्म कौन-सा है?”

37 ईसा ने जवाब दिया, “‘रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ 38 यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। 39 और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ 40 तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहक़ाम पर मबनी हैं।”

मसीह के बारे में सवाल

41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उनसे पूछा, 42 “तुम्हारा मसीह के बारे में क्या खयाल है? वह किसका फ़रज़ंद है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह दाऊद का फ़रज़ंद है।”

43 ईसा ने कहा, “तो फिर दाऊद रूहुल-कुद्स की मारिफ़त उसे किस तरह ‘रब’ कहता है? क्योंकि वह फ़रमाता है,

44 ‘रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ,

जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

45 दाऊद तो खुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह उसका फरज़ंद हो सकता है?”

46 कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से किसी ने भी उससे मज़ीद कुछ पूछने की ज़रूरत न की।

23

उलमा और फ़रीसियों से खबरदार

1 फिर ईसा हज़ूम और अपने शागिर्दों से मुखातिब हुआ, 2 “शरीअत के उलमा और फ़रीसी मूसा की कुरसी पर बैठे हैं। 3 चुनाँचे जो कुछ वह तुमको बताते हैं वह करो और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते हैं वह न करो, क्योंकि वह खुद अपनी तालीम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारते। 4 वह भारी गठड़ियाँ बाँध बाँधकर लोगों के कंधों पर रख देते हैं, लेकिन खुद उन्हें उठाने के लिए एक उँगली तक हिलाने को तैयार नहीं होते। 5 जो भी करते हैं दिखावे के लिए करते हैं। जो तावीज़ * वह अपने बाज़ुओं और पेशानियों पर बाँधते और जो फुँदने अपने लिबास से लगाते हैं वह खास बड़े होते हैं। 6 उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि ज़ियाफ़तों और इबादतख़ानों में इज़ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 7 जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़ज़त करते और ‘उस्ताद’ कहकर उनसे बात करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। 8 लेकिन तुमको उस्ताद नहीं कहलाना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही उस्ताद है जबकि तुम सब भाई हो। 9 और दुनिया में किसी को ‘बाप’ कहकर उससे बात न करो, क्योंकि तुम्हारा एक ही बाप है और वह आसमान पर है। 10 हादी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही हादी है यानी अल-मसीह। 11 तुममें से सबसे बड़ा शख्स तुम्हारा खादिम होगा। 12 क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करेगा उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करेगा उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।

उनकी रियाकारी पर अफ़सोस

13 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने आसमान की बादशाही पर ताला लगाते हो। न तुम खुद दाखिल होते हो, न उन्हें दाखिल होने देते हो जो अंदर जाना चाहते हैं।

* 23:5 तावीज़ों में तैरत के हवालाजात लिखकर रखे जाते थे।

14 [शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों पर क़ब्ज़ा कर लेते और दिखावे के लिए लंबी लंबी नमाज़ पढ़ते हो। इसलिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा मिलेगी।]

15 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम एक नौमुरीद बनाने की खातिर ख़ुशकी और तरी के लंबे सफ़र करते हो। और जब इसमें कामयाब हो जाते हो तो तुम उस शख्स को अपनी निसबत जहन्नुम का दुगना शरीर फ़रज़द बना देते हो। 16 अंधे राहनुमाओ, तुम पर अफ़सोस! तुम कहते हो, 'अगर कोई बैतुल-मुक़द्दस की क़सम खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह बैतुल-मुक़द्दस के सोने की क़सम खाए तो लाज़िम है कि उसे पूरा करे।' 17 अंधे अहमक्रो! ज़्यादा अहम किया है, सोना या बैतुल-मुक़द्दस जो सोने को मख़सूसो-मुक़द्दस बनाता है? 18 तुम यह भी कहते हो, 'अगर कोई क़ुरबानगाह की क़सम खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह क़ुरबानगाह पर पड़े हृदिये की क़सम खाए तो लाज़िम है कि वह उसे पूरा करे।' 19 अंधो! ज़्यादा अहम किया है, हृदिया या क़ुरबानगाह जो हृदिये को मख़सूसो-मुक़द्दस बनाती है? 20 गरज़, जो क़ुरबानगाह की क़सम खाता है वह उन तमाम चीज़ों की क़सम भी खाता है जो उस पर पड़ी हैं। 21 और जो बैतुल-मुक़द्दस की क़सम खाता है वह उस की भी क़सम खाता है जो उसमें सुकूनत करता है। 22 और जो आसमान की क़सम खाता है वह अल्लाह के तख़्त की और उस पर बैठनेवाले की क़सम भी खाता है।

23 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात से पौदीने, अजवायन और ज़ीरे का दसवाँ हिस्सा हृदिये के लिए मख़सूस करते हो, लेकिन तुमने शरीअत की ज़्यादा अहम बातों को नज़रंदाज़ कर दिया है यानी इनसाफ़, रहम और वफ़ादारी को। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो। 24 अंधे राहनुमाओ! तुम अपने मशरूब छानते हो ताकि ग़लती से मच्छर न पी लिया जाए, लेकिन साथ साथ ऊँट को निगल लेते हो।

25 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से वह लूट-मार और ऐशपरस्ती से भरे होते हैं। 26 अंधे फ़रीसियो, पहले अंदर से प्याले और बरतन की सफ़ाई करो, और फिर वह बाहर से भी पाक-साफ़ हो जाएंगे।

27 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम ऐसी कब्रों से मुताबिकत रखते हो जिन पर सफेदी की गई हो। गो वह बाहर से दिलकश नज़र आती हैं, लेकिन अंदर से वह मुरदों की हड्डियों और हर क्रिस्म की नापाकी से भरी होती हैं। 28 तुम भी बाहर से रास्तबाज़ दिखाई देते हो जबकि अंदर से तुम रियाकारी और बेदीनी से मामूर होते हो।

29 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए कब्रें तामीर करते और रास्तबाज़ों के मज़ार सजाते हो। 30 और तुम कहते हो, 'अगर हम अपने बापदादा के ज़माने में ज़िंदा होते तो नबियों को क़त्ल करने में शरीक न होते।' 31 लेकिन यह कहने से तुम अपने खिलाफ़ गवाही देते हो कि तुम नबियों के कातिलों की औलाद हो। 32 अब जाओ, वह काम मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़ दिया था। 33 साँपो, ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम किस तरह जहन्नुम की सज़ा से बच पाओगे? 34 इसलिए मैं नबियों, दानिशमंदों और शरीअत के आलिमों को तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उनमें से बाज़ को तुम क़त्ल और मसलूब करोगे और बाज़ को अपने इबादतखानों में ले जाकर कोड़े लगवाओगे और शहर बशहर उनका ताक्कुब करोगे। 35 नतीजे में तुम तमाम रास्तबाज़ों के क़त्ल के ज़िम्मादार ठहरोगे—रास्तबाज़ हाबील के क़त्ल से लेकर ज़करियाह बिन बरकियाह के क़त्ल तक जिसे तुमने बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े और उसके सहन में मौजूद कुरबानगाह के दरमियान मार डाला। 36 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह सब कुछ इसी नसल पर आएगा।

यस्शलम पर अफ़सोस

37 हाय यस्शलम, यस्शलम! तू जो नबियों को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़म्बरों को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मुरगी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके महफूज़ कर लेती है। लेकिन तुमने न चाहा। 38 अब तुम्हारे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा। 39 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।”

24

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

1 ईसा बैतुल-मुकद्दस को छोड़कर निकल रहा था कि उसके शागिर्द उसके पास आए और बैतुल-मुकद्दस की मुख्तलिफ़ इमारतों की तरफ़ उस की तवज्जुह दिलाने लगे। 2 लेकिन ईसा ने जवाब में कहा, “क्या तुमको यह सब कुछ नज़र आता है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानियों की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैठ गया। शागिर्द अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा, “हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे पता चलेगा कि आप आनेवाले हैं और यह दुनिया ख़त्म होनेवाली है?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। 5 क्योंकि बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6 जंगों की ख़बरें और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी, लेकिन मुहतात रहो ताकि तुम घबरा न जाओ। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आखिरत नहीं होगी। 7 एक क़ौम दूसरी के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ़। काल पड़ेंगे और जगह जगह ज़लज़ले आएँगे। 8 लेकिन यह सिर्फ़ दर्द-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।

9 फिर वह तुमको बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और तुमको क़त्ल करेंगे। तमाम क़ौमों तुमसे इसलिए नफ़रत करेंगी कि तुम मेरे पैरोकार हो। 10 उस वक़्त बहुत-से लोग ईमान से बरग़शा होकर एक दूसरे को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक दूसरे से नफ़रत करेंगे। 11 बहुत-से झूठे नबी खड़े होकर बहुत-से लोगों को गुमराह कर देंगे। 12 बेदीनी के बढ़ जाने की वजह से बेशतर लोगों की मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। 13 लेकिन जो आखिर तक कायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 14 और बादशाही की इस ख़ुशख़बरी के पैग़ाम का एलान पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि तमाम क़ौमों के सामने उस की गवाही दी जाए। फिर ही आखिरत आएगी।

बैतुल-मुकद्दस की बेहरमती

15 एक दिन आएगा जब तुम मुकद्दस मक़ाम में वह कुछ खड़ा देखोगे जिसका ज़िक्र दानियाल नबी ने किया और जो बेहरमती और तबाही का बाइस है।” (कारी इस पर ध्यान दे!) 16 “उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 17 जो अपने घर की छत पर हो वह घर में से कुछ साथ ले जाने के

लिए न उतरे। 18 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 19 उन खवातीन पर अफसोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 20 दुआ करो कि तुमको सर्दियों के मौसम में या सबत के दिन हिजरत न करनी पड़े। 21 क्योंकि उस वक्त ऐसी शदीद मुसीबत होगी कि दुनिया की तखलीक से आज तक देखने में न आई होगी। इस क्रिस्म की मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी। 22 और अगर इस मुसीबत का दौरानिया मुखतसर न किया जाता तो कोई न बचता। लेकिन अल्लाह के चुने हुआओं की खातिर इसका दौरानिया मुखतसर कर दिया जाएगा।

23 उस वक्त अगर कोई तुमको बताए, 'देखो, मसीह यहाँ है' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात न मानना। 24 क्योंकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे जो बड़े अजीबो-गरीब निशान और मोजिजे दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को भी गलत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता। 25 देखो, मैंने तुम्हें पहले से इससे आगाह कर दिया है।

26 चुनौचे अगर कोई तुमको बताए, 'देखो, वह रेगिस्तान में है' तो वहाँ जाने के लिए न निकलना। और अगर कोई कहे, 'देखो, वह अंदरूनी कमरों में है' तो उसका यक्रीन न करना। 27 क्योंकि जिस तरह बादल की बिजली मशरिफ में कड़ककर मगरिब तक चमकती है उसी तरह इब्ने-आदम की आमद भी होगी।

28 जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिट्ट जमा हो जाएंगे।

इब्ने-आदम की आमद

29 मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी खत्म हो जाएगी। सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की कुव्वते हिलाई जाएँगी। 30 उस वक्त इब्ने-आदम का निशान आसमान पर नज़र आएगा। तब दुनिया की तमाम कौमों मातम करेंगी। वह इब्ने-आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते हुए देखेगी। 31 और वह अपने फरिश्तों को बिगुल की ऊँची आवाज़ के साथ भेज देगा ताकि उसके चुने हुआओं को चारों तरफ से जमा करें, आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इकट्ठा करें।

अंजीर के दरख्त से सबक

32 अंजीर के दरख्त से सबक सीखो। ज्योंही उस की शाखें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि

गरमियों का मौसम करीब आ गया है। 33 इसी तरह जब तुम यह वाकियात देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद करीब बल्कि दरवाजे पर है। 34 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के खत्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 35 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिशतों और फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 37 जब इब्ने-आदम आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 38 क्योंकि सैलाब से पहले के दिनों में लोग उस वक़्त तक खाते-पीते और शादियाँ करते करते रहे जब तक नूह कशती में दाखिल न हो गया। 39 वह उस वक़्त तक आनेवाली मुसीबत के बारे में लाइल्म रहे जब तक सैलाब आकर उन सबको बहा न ले गया। जब इब्ने-आदम आएगा तो इसी किस्म के हालात होंगे। 40 उस वक़्त दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 41 दो ख़वातीन चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा।

42 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा ख़ुदावंद किस दिन आ जाएगा। 43 यक़ीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को मालूम होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर चौकस रहता और उसे अपने घर में नक़ब लगाने न देता। 44 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम उस की तवक्को नहीं करोगे।

वफ़ादार नौकर

45 चुनाँचे कौन-सा नौकर वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़रर किया हो। उस की एक ज़िम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर खाना खिलाए। 46 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर मुक़रर करेगा। 48 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी देर है।' 49 वह अपने साथी नौकरों को पीटने और शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50 अगर वह ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिसकी

तवक्रको नौकर को नहीं होगी। 51 इन हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।

25

दस कुँवारियों की तमसील

1 उस वक़्त आसमान की बादशाही दस कुँवारियों से मुताबिक़त रखेगी जो अपने चराग लेकर दूल्हे को मिलने के लिए निकलें। 2 उनमें से पाँच नासमझ थीं और पाँच समझदार। 3 नासमझ कुँवारियों ने अपने पास चरागों के लिए फ़ाल्तू तेल न रखा। 4 लेकिन समझदार कुँवारियों ने कुप्पी में तेल डालकर अपने साथ ले लिया। 5 दूल्हे को आने में बड़ी देर लगी, इसलिए वह सब ऊँघ ऊँघकर सो गई।

6 आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा पहुँच रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7 इस पर तमाम कुँवारियाँ जाग उठीं और अपने चरागों को दुस्त करने लगीं। 8 नासमझ कुँवारियों ने समझदार कुँवारियों से कहा, 'अपने तेल में से हमें भी कुछ दे दो। हमारे चराग बुझनेवाले हैं।' 9 दूसरी कुँवारियों ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न हो कि न सिर्फ़ तुम्हारे लिए बल्कि हमारे लिए भी तेल काफ़ी न हो। दुकान पर जाकर अपने लिए ख़रीद लो।' 10 चुनाँचे नासमझ कुँवारियाँ चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच गया। जो कुँवारियाँ तैयार थीं वह उसके साथ शादी हाल में दाख़िल हुईं। फिर दरवाज़े को बंद कर दिया गया।

11 कुछ देर के बाद बाक़ी कुँवारियाँ आईं और चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।' 12 लेकिन उसने जवाब दिया, 'यक़ीन जानो, मैं तुमको नहीं जानता।'

13 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम इब्ने-आदम के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

तीन नौकरों की तमसील

14 उस वक़्त आसमान की बादशाही यों होगी : एक आदमी को बैरूने-मुल्क जाना था। उसने अपने नौकरों को बुलाकर अपनी मिलकियत उनके सुपुर्द कर दी। 15 पहले को उसने सोने के 5,000 सिक्के दिए, दूसरे को 2,000 और तीसरे को 1,000। हर एक को उसने उस की काबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए। फिर

वह खाना हुआ। 16 जिस नौकर को 5,000 सिक्के मिले थे उसने सीधा जाकर उन्हें किसी कारोबार में लगाया। इससे उसे मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल हुए। 17 इसी तरह दूसरे को भी जिसे 2,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल हुए। 18 लेकिन जिस आदमी को 1,000 सिक्के मिले थे वह चला गया और कहीं ज़मीन में गढ़ा खोदकर अपने मालिक के पैसे उसमें छुपा दिए।

19 बड़ी देर के बाद उनका मालिक लौट आया। जब उसने उनके साथ हिसाब-किताब किया 20 तो पहला नौकर जिसे 5,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 5,000 सिक्के लेकर आया। उसने कहा, 'जनाब, आपने 5,000 सिक्के मेरे सुपुर्द किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 21 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और अपने मालिक की खुशी में शरीक हो जाओ।'

22 फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, आपने 2,000 सिक्के मेरे सुपुर्द किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 23 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और अपने मालिक की खुशी में शरीक हो जाओ।'

24 फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, मैं जानता था कि आप सख्त आदमी हैं। जो बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल आप काटते हैं और जो कुछ आपने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करते हैं। 25 इसलिए मैं डर गया और जाकर आपके पैसे ज़मीन में छुपा दिए। अब आप अपने पैसे वापस ले सकते हैं।'

26 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शरीर और सुस्त नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैंने नहीं बोया उस की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ मैंने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ? 27 तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा करा दिए? अगर ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।' 28 यह कहकर मालिक दूसरों से मुखातिब हुआ, 'यह पैसे इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास 10,000 सिक्के हैं। 29 क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 30 अब इस

बेकार नौकर को निकालकर बाहर की तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।’

आखिरी अदालत

31 जब इब्ने-आदम अपने जलाल के साथ आएगा और तमाम फरिश्ते उसके साथ होंगे तो वह अपने जलाली तख्त पर बैठ जाएगा। 32 तब तमाम क्रौमें उसके सामने जमा की जाएंगी। और जिस तरह चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है उसी तरह वह लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा। 33 वह भेड़ों को अपने दहने हाथ खड़ा करेगा और बकरियों को अपने बाएँ हाथ। 34 फिर बादशाह दहने हाथवालों से कहेगा, ‘आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो! जो बादशाही दुनिया की तखलीक से तुम्हारे लिए तैयार है उसे मीरास में ले लो। 35 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी की, 36 मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुमने मेरी देख-भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझसे मिलने आए।’

37 फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे, ‘खुदावंद, हमने आपको कब भूका देखकर खाना खिलाया, आपको कब प्यासा देखकर पानी पिलाया? 38 हमने आपको कब अजनबी की हैसियत से देखकर आपकी मेहमान-नवाज़ी की, आपको कब नंगा देखकर कपड़े पहनाए? 39 हम आपको कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा देखकर आपसे मिलने गए?’ 40 बादशाह जवाब देगा, ‘मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से एक के लिए किया वह तुमने मेरे ही लिए किया।’

41 फिर वह बाएँ हाथवालों से कहेगा, ‘लानती लोगो, मुझसे दूर हो जाओ और उस अबदी आग में चले जाओ जो इबलीस और उसके फरिश्तों के लिए तैयार है। 42 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी न पिलाया, 43 मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और तुम मुझसे मिलने न आए।’

44 फिर वह जवाब में पूछेंगे, ‘खुदावंद, हमने आपको कब भूका, प्यासा, अजनबी, नंगा, बीमार या जेल में पड़ा देखा और आपकी खिदमत न की?’ 45 वह जवाब देगा, ‘मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब कभी तुमने इन सबसे छोटों में से एक

की मदद करने से इनकार किया तो तुमने मेरी खिदमत करने से इनकार किया।’
46 फिर यह अबदी सज़ा भुगतने के लिए जाएंगे जबकि रास्तबाज़ अबदी जिंदगी में दाखिल होंगे।”

26

ईसा के खिलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

1 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शागिर्दों से मुखातिब हुआ, 2 “तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू होगी। उस वक़्त इब्ने-आदम को दुश्मन के हवाले किया जाएगा ताकि उसे मसलूब किया जाए।”

3 फिर राहनुमा इमाम और क्रौम के बुजुर्ग कायफ़ा नामी इमामे-आज़म के महल में जमा हुए 4 और ईसा को किसी चालाकी से गिरफ़्तार करके क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। 5 उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

खातून ईसा पर खुशबू उंडेलती है

6 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाखिल हुआ जो किसी वक़्त कोठ का मरीज़ था। उसका नाम शमौन था। 7 ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई जिसके पास निहायत कीमती इत्र का इत्रदान था। उसने उसे ईसा के सर पर उंडेल दिया। 8 शागिर्द यह देखकर नाराज़ हुए। उन्होंने कहा, “इतना कीमती इत्र ज़ाया करने की क्या ज़रूरत थी? 9 यह बहुत महँगी चीज़ है। अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे गरीबों को दिए जा सकते थे।”

10 लेकिन उनके खयाल पहचानकर ईसा ने उनसे कहा, “तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक नेक काम किया है। 11 गरीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक तुम्हारे पास नहीं रहूँगा। 12 मुझ पर इत्र उंडेलने से उसने मेरे बदन को दफ़न होने के लिए तैयार किया है। 13 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की खुशख़बरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस खातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

14 फिर यहूदाह इस्क़रियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया। 15 उसने पूछा, “आप मुझे ईसा को आपके हवाले करने के एवज़

कितने पैसे देने के लिए तैयार हैं?” उन्होंने उसके लिए चाँदी के 30 सिक्के मुतैयिन किए। 16 उस वक्त से यहूदा ईसा को उनके हवाले करने का मौका ढूँढने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

17 बेखमीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा के शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “हम कहाँ आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?”

18 उसने जवाब दिया, “यरूशलम शहर में फुलों आदमी के पास जाओ और उसे बताओ, ‘उस्ताद ने कहा है कि मेरा मुकर्ररा वक्त करीब आ गया है। मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की ईद का खाना आपके घर में खाऊँगा’।”

19 शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें बताया था और फ़सह की ईद का खाना तैयार किया।

कौन ग़दार है?

20 शाम के वक्त ईसा बारह शागिर्दों के साथ खाना खाने के लिए बैठ गया। 21 जब वह खाना खा रहे थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

22 शागिर्द यह सुनकर निहायत गम्भीर हुए। बारी बारी वह उससे पूछने लगे, “ख़ुदावंद, मैं तो नहीं हूँ?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “जिसने मेरे साथ अपना हाथ सालन के बरतन में डाला है वही मुझे दुश्मन के हवाले करेगा। 24 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शख्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”

25 फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने को था पूछा, “उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, तुमने ख़ुद कहा है।”

फ़सह का आखिरी खाना

26 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शुक़रगुजारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।”

27 फिर उसने मैं का प्याला लेकर शक्रगुजारी की दुआ की और उसे उन्हें देकर कहा, “तुम सब इसमें से पियो। 28 यह मेरा खून है, नए अहद का वह खून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाए। 29 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में ही पियूँगा।”

30 फिर एक ज़बूर गाकर वह निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 ईसा ने उन्हें बताया, “आज रात तुम सब मेरी बाबत बरगशता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुकद्दस में अल्लाह फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’ 32 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”

33 पतरस ने एतराज़ किया, “दूसरे बेशक सब आपकी बाबत बरगशता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुरग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

35 पतरस ने कहा, “हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।”

दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

36 ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग़ में पहुँचा जिसका नाम गत्समनी था। उसने उनसे कहा, “यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।” 37 उसने पतरस और ज़बदी के दो बेटों याक़ूब और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह ग़मगीन और बेक्रार होने लगा। 38 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर मेरे साथ जागते रहो।”

39 कुछ आगे जाकर वह औंधे मुँह ज़मीन पर गिरकर यों दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर मुमकिन हो तो दुख का यह प्याला मुझसे हट जाए। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”

40 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से पूछा, “क्या तुम लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग सकते? 41 जागते

और दुआ करते रहो ताकि आजमाइश में न पड़ो। क्योंकि रह तो तैयार है लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

42 एक बार फिर उसने जाकर दुआ की, “मेरे बाप, अगर यह प्याला मेरे लिए बगैर हट नहीं सकता तो फिर तेरी मरज़ी पूरी हो।” 43 जब वह वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बंदौलत उनकी आँखें बोझल थीं।

44 चुनौचे वह उन्हें दुबारा छोड़कर चला गया और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45 फिर ईसा शागिर्दों के पास वापस आया और उनसे कहा, “अभी तक सो और आराम कर रहे हो? देखो, वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम गुनाहगारों के हवाले किया जाए। 46 उठो! आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला करीब आ चुका है।”

ईसा की गिरिफ्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का बड़ा हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों और क्रौम के बुजुर्गों ने भेजा था। 48 इस ग़द्दर यहूदा ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ्तार कर लेना।

49 ज्योंही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया और “उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!” कहकर उसे बोसा दिया।

50 ईसा ने कहा, “दोस्त, क्या तू इसी मकसद से आया है?”

फिर उन्होंने उसे पकड़कर गिरिफ्तार कर लिया। 51 इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म के गुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया। 52 लेकिन ईसा ने कहा, “अपनी तलवार को मियान में रख, क्योंकि जो भी तलवार चलाता है उसे तलवार से मारा जाएगा। 53 या क्या तू नहीं समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते फ़ौरन भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54 लेकिन अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलामे-मुकद्दस की पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होतीं जिनके मुताबिक यह ऐसा ही होना है?”

55 उस वक़्त ईसा ने हुजूम से कहा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारों और लाठियों लिए मुझे गिरिफ्तार करने निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुकद्दस में बैठकर तालीम देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरिफ्तार नहीं किया। 56 लेकिन यह

सब कुछ इसलिए हो रहा है ताकि नबियों के सहीफों में दर्ज पेशगोइयाँ पूरी हो जाएँ।”

फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए।

ईसा यहूदी अदालते-आलिया के सामने

57 जिन्होंने ईसा को गिरफ्तार किया था वह उसे कायफा इमामे-आज़म के घर ले गए जहाँ शरीअत के तमाम उलमा और क़ौम के बुजुर्ग जमा थे। 58 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया। उसमें दाखिल होकर वह मुलाज़िमों के साथ आग के पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अंजाम देख सके। 59 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के खिलाफ़ झूटी गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। 60 बहुत-से झूटे गवाह सामने आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली। आखिरकार दो आदमियों ने सामने आकर 61 यह बात पेश की, “इसने कहा है कि मैं अल्लाह के बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर सकता हूँ।”

62 फिर इमामे-आज़म ने खड़े होकर ईसा से कहा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे खिलाफ़ दे रहे हैं?”

63 लेकिन ईसा खामोश रहा। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “मैं तुझे जिंदा ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का फ़रज़ंद मसीह है?”

64 ईसा ने कहा, “जी, तूने ख़ुद कह दिया है। और मैं तुम सबको बताता हूँ कि आइंदा तुम इब्ने-आदम को कादिरे-मुतलक के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”

65 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “इसने कुफ़र बका है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। 66 आपका क्या फ़ैसला है?”

उन्होंने जवाब दिया, “यह सज़ाए-मौत के लायक़ है।”

67 फिर वह उस पर थकने और उसके मुक्के मारने लगे। बाज़ ने उसके थपपड़ मार मारकर 68 कहा, “ऐ मसीह, नबुव्वत करके हमें बता कि तुझे किसने मारा।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

69 इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था। एक नौकरानी उसके पास आई। उसने कहा, “तुम भी गलील के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

70 लेकिन पतरस ने उन सबके सामने इनकार किया, “मैं नहीं जानता कि तु क्या बात कर रही है।” यह कहकर 71 वह बाहर गेट तक गया। वहाँ एक और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े लोगों से कहा, “यह आदमी ईसा नासरी के साथ था।”

72 दुबारा पतरस ने इनकार किया। इस दफ़ा उसने क्रसम खाकर कहा, “मैं इस आदमी को नहीं जानता।”

73 थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पतरस के पास आकर कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम्हारी बोली से साफ पता चलता है।”

74 इस पर पतरस ने क्रसम खाकर कहा, “मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी को नहीं जानता!” फ़ौरन मुरग की बाँग सुनाई दी। 75 फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कही थी, “मुरग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” इस पर वह बाहर निकला और टूटे दिल से खूब रोया।

27

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

1 सुबह-सवेरे तमाम राहनुमा इमाम और क्रौम के तमाम बुजुर्ग इस फ़ैसले तक पहुँच गए कि ईसा को सज़ाए-मौत दी जाए। 2 वह उसे बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।

यहूदा की खुदकुशी

3 जब यहूदा ने जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर दिया था देखा कि उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा दे दिया गया है तो उसने पछताकर चाँदी के 30 सिक्के राहनुमा इमामों और क्रौम के बुजुर्गों को वापस कर दिए। 4 उसने कहा, “मैंने गुनाह किया है, क्योंकि एक बेकुसूर आदमी को सज़ाए-मौत दी गई है और मैं ही ने उसे आपके हवाले किया है।”

उन्होंने जवाब दिया, “हमें क्या! यह तेरा मसला है।” 5 यहूदा चाँदी के सिक्के बैतुल-मुकद्दस में फेंककर चला गया। फिर उसने जाकर फाँसी ले ली।

6 राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके कहा, “शरीअत यह कैसे बैतुल-मुकद्दस के खज़ाने में डालने की इजाज़त नहीं देती, क्योंकि यह खूनरेज़ी का मुआवज़ा है।” 7 आपस में मशवरा करने के बाद उन्होंने कुम्हार का खेत खरीदने का फैसला किया ताकि परदेसियों को दफनाने के लिए जगह हो। 8 इसलिए यह खेत आज तक खून का खेत कहलाता है।

9 यों यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “उन्होंने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह रकम जो इसराईलियों ने उसके लिए लगाई थी। 10 इनसे उन्होंने कुम्हार का खेत खरीद लिया, बिलकुल ऐसा जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था।”

पीलातुस ईसा की पूछ-गछ करता है

11 इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातुस के सामने पेश किया गया। उसने उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।” 12 लेकिन जब राहनुमा इमामों और क्रौम के बुजुर्गों ने उस पर इलज़ाम लगाए तो ईसा खामोश रहा।

13 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल किया, “क्या तुम यह तमाम इलज़ामात नहीं सुन रहे जो तुम पर लगाए जा रहे हैं?”

14 लेकिन ईसा ने एक इलज़ाम का भी जवाब न दिया, इसलिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

सजाए-मौत का फैसला

15 उन दिनों यह रिवाज था कि गवर्नर हर साल फ़सह की ईद पर एक कैदी को आज़ाद कर देता था। यह कैदी हुज़ूम से मुंताख़ब किया जाता था। 16 उस वक़्त जेल में एक बदनाम कैदी था। उसका नाम बर-अब्बा था। 17 चुनाँचे जब हुज़ूम जमा हुआ तो पीलातुस ने उससे पूछा, “तुम क्या चाहते हो? मैं बर-अब्बा को आज़ाद करूँ या ईसा को जो मसीह कहलाता है?” 18 वह तो जानता था कि उन्होंने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

19 जब पीलातुस यों अदालत के तख़्त पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे पैगाम भेजा, “इस बेकुसूर आदमी को हाथ न लगाएँ, क्योंकि मुझे पिछली रात इसके बाइस ख़ाब में शदीद तकलीफ़ हुई।”

20 लेकिन राहनुमा इमामों और कौम के बुजुर्गों ने हुजूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को मॉंगे और ईसा की मौत तलब करें। गवर्नर ने दुबारा पूछा, 21 “मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए आजाद करूँ?”

वह चिल्लाए, “बर-अब्बा को।”

22 पीलातुस ने पूछा, “फिर मैं ईसा के साथ क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?”

वह चीखे, “उसे मसलूब करें।”

23 पीलातुस ने पूछा, “क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?”

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीखते रहे, “उसे मसलूब करें!”

24 पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक नहीं पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है। इसलिए उसने पानी लेकर हुजूम के सामने अपने हाथ धोए। उसने कहा, “अगर इस आदमी को क़त्ल किया जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, तुम ही उसके लिए ज़वाबदेह ठहरो।”

25 तमाम लोगों ने जवाब दिया, “हम और हमारी औलाद उसके खून के जवाबदेह हैं।”

26 फिर उसने बर-अब्बा को आजाद करके उन्हें दे दिया। लेकिन ईसा को उसने कोड़े लगाने का हुक्म दिया, फिर उसे मसलूब करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

27 गवर्नर के फ़ौजी ईसा को महल बनाम प्रैटोरियुम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को उसके इर्दगिर्द इक़ठा किया। 28 उसके कपड़े उतारकर उन्होंने उसे अरगवानी रंग का लिबास पहनाया, 29 फिर काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उसके दहने हाथ में छड़ी पकड़ाकर उन्होंने उसके सामने घुटने टेककर उसका मज़ाक़ उड़ाया, “ऐ यहदियों के बादशाह, आदाब!” 30 वह उस पर थकते रहे, छड़ी लेकर बार बार उसके सर को मारा। 31 फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरगवानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

32 शहर से निकलते वक़्त उन्होंने एक आदमी को देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उसे उन्होंने सलीब उठाकर ले जाने पर मजबूर किया। 33 यों चलते चलते वह एक मक़ाम तक पहुँच गए जिसका

नाम गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 34 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज़ मिलाई गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने से इनकार कर दिया।

35 फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस को क्या क्या मिले उन्होंने कुरा डाला। 36 यों वह वहाँ बैठकर उस की पहरादारी करते रहे। 37 सलीब पर ईसा के सर के ऊपर एक तख्ती लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, “यह यहूदियों का बादशाह ईसा है।” 38 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ।

39 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिकारत का इज़हार किया। 40 उन्होंने कहा, “तूने तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा। अब अपने आपको बचा! अगर तू वाकई अल्लाह का फ़रज़ंद है तो सलीब पर से उतर आ।”

41 राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और कौम के बुज़ुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाया, 42 “इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता। यह इसराईल का बादशाह है! अभी यह सलीब पर से उतर आए तो हम इस पर ईमान ले आएँगे। 43 इसने अल्लाह पर भरोसा रखा है। अब अल्लाह इसे बचाए अगर वह इसे चाहता है, क्योंकि इसने कहा, “मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ।”

44 और जिन डाकुओं को उसके साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

45 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46 फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक्तनी” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

47 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, “वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 48 उनमें से एक ने फ़ौरन दौड़कर एक इस्फ़ंज को मै के सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की।

49 दूसरों ने कहा, “आओ, हम देखें, शायद इलियास आकर उसे बचाए।”

50 लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े जोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

51 उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। जलजला आया, चटानें फट गईं 52 और क़ब्रें खुल गईं। कई मरहम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर दिया गया। 53 वह ईसा के जी उठने के बाद क़ब्रों में से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाखिल हुए और बहुतों को नज़र आए।

54 जब पास खड़े रोमी अफ़सर * और ईसा की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने जलजला और यह तमाम वाक़ियात देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, “यह वाक़ई अल्लाह का फ़रज़द था।”

55 बहुत-सी ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर इसका मुशाहदा कर रही थीं। वह गलील में ईसा के पीछे चलकर यहाँ तक उस की खिदमत करती आई थीं। 56 उनमें मरियम मगदलीनी, याक़ूब और यूसुफ़ की माँ मरियम और ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ भी थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

57 जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का एक दौलतमंद आदमी बनाम यूसुफ़ आया। वह भी ईसा का शागिर्द था। 58 उसने पीलातुस के पास जाकर ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस ने हुक्म दिया कि वह उसे दे दी जाए। 59 यूसुफ़ ने लाश को लेकर उसे कतान के एक साफ़ कफ़न में लपेटा 60 और अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा क़ब्र में रख दिया जो चटान में तराशी गई थी। आखिर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया और चला गया। 61 उस वक़्त मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र के मुकाबिल बैठी थीं।

क़ब्र की पहरादारी

62 अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा इमाम और फ़रीसी पीलातुस के पास आए। 63 “जनाब,” उन्होंने कहा, “हमें याद आया कि जब वह धोकेबाज़ अभी ज़िंदा था तो उसने कहा था, ‘तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा।’ 64 इसलिए हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे दिन तक महफूज़ रखा जाए। ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उस की लाश को चुरा ले जाएँ और लोगों को बताएँ कि वह मुरदों में से

* 27:54 सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफ़सर।

जी उठा है। अगर ऐसा हुआ तो यह आखिरी धोका पहले धोके से भी ज्यादा बड़ा होगा।”

65 पीलातस ने जवाब दिया, “पहरेदारों को लेकर कब्र को इतना महफूज कर दो जितना तुम कर सकते हो।”

66 चुनौचे उन्होंने जाकर कब्र को महफूज कर लिया। कब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगाकर उन्होंने उस पर पहरेदार मुकर्रर कर दिए।

28

ईसा जी उठता है

1 इतवार को सुबह-सवेरे ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो रहा था। 2 अचानक एक शदीद जलजला आया, क्योंकि रब का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर आया और कब्र के पास जाकर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ लुढका दिया। फिर वह उस पर बैठ गया। 3 उस की शक्लो-सूरत बिजली की तरह चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ की मानिंद सफ़ेद था। 4 पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते मुरदा से हो गए।

5 फ़रिश्ते ने खवातीन से कहा, “मत डरो। मुझे मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। 6 वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को खुद देख लो जहाँ वह पड़ा था। 7 और अब जल्दी से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वही तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको इससे आगाह किया है।”

8 खवातीन जल्दी से कब्र से चली गईं। वह सहमी हुईं लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी उसके शागिर्दों को यह खबर सुनाने गईं।

9 अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा, “सलाम।” वह उसके पास आईं, उसके पाँव पकड़े और उसे सिजदा किया। 10 ईसा ने उनसे कहा, “मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।”

पहरेदारों की रिपोर्ट

11 खवातीन अभी रास्ते में थीं कि पहरेदारों में से कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब कुछ बता दिया। 12 राहनुमा इमामों ने कौम के बुजुर्गों के साथ एक

मीटिंग मुनअक्रिद की और पहरेदारों को रिश्वत की बड़ी रकम देने का फैसला किया। 13 उन्होंने उन्हें बताया, “तुमको कहना है, ‘जब हम रात के वक्रत सो रहे थे तो उसके शागिर्द आए और उसे चुरा ले गए।’ 14 अगर यह खबर गवर्नर तक पहुँचे तो हम उसे समझा लेंगे। तुमको फिकर करने की ज़रूरत नहीं।”

15 चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्वत लेकर वह कुछ किया जो उन्हें सिखाया गया था। उनकी यह कहानी यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई और आज तक उनमें रायज है।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

16 फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के पास पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था। 17 वहाँ उसे देखकर उन्होंने उसे सिजदा किया। लेकिन कुछ शक में पड़ गए। 18 फिर ईसा ने उनके पास आकर कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख्तियार मुझे दे दिया गया है। 19 इसलिए जाओ, तमाम क्रौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-कुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। 20 और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

किताने-मुकदस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2023-11-29

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 22 Feb 2024 from source files dated 30 Nov 2023

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299